

प्रथम ॥ श्रीसोतारामचन्द्रायनमः श्रीलक्ष्मणा  
 यनमः राधाकृष्णाभ्यांनमः श्रीभरथशत्रुघ्नाभ्यां  
 नमः श्रीहनुमतयेनमः श्रीशिवायनमः श्रीवावराय  
 दासायनमः श्रीमातृचर्णकमलाभ्यांनमः ॥ इस  
 कालमें कलिन संसार में प्रति प्रवेश किष्ठा है जिस  
 कारण से धर्म वेदों के मार्ग कालोप हो गया है अनेक प्र  
 कार के पाखण्ड मतों ने धर्म का प्रवृत्ति भया है तत्र प्रमा  
 ण ॥ निशामुखे पुरव द्योतास्तमसाभाति नो ग्रहाः य  
 थापापेन पाखण्डाः न हि वेदाकलौ युगे ॥ श्रीमत्भगव  
 तेषु लिखितं प्रर्थं जिस प्रकार से प्राबुट काल रात्रि में ख  
 द्योत प्रकास करते हैं वैसे धकार से ग्रह नहीं देखाई  
 पड़ते तैसे ही पाखण्ड मतों से वेद म कलि मलुप्त  
 होते हैं तथापि सभ को उचित है की वेद मार्ग रक्षार्थ उ  
 द्योग करे सत्य में तब धर्म का रक्षक सेवाइ ईश्वर के  
 कोई नहीं है परंतु उद्योग करण ईश्वर सा है तत्र प्रमाण



श्लोक मया वद्धो धर्म सेतुर्गरीयान् काले काले  
 रक्षणीयो भवन्दिभूयो भूयो भाविनो भूमिपाला  
 ननत्वा नत्वा याचिन्ते रामचन्द्रः योगबशिष्ठेषु  
 लिखितः प्रथम श्रीरामचन्द्रनमः पूर्वक होने वाले  
 राजों से मांगते हैं की हमारा बांधा हुआ जो धर्म से  
 तु है सो काल काल रक्षा कर्ते रहो ॥ इस प्रज्ञानुसार  
 से मैं अल्प बुद्धि श्री धर्म मूर्ति धर्म प्रतिपालक  
 गोब्राह्मण रक्षक श्री ठाकुर प्रयोध्याबकससिंहा  
 त्मज श्री बाबू महावीर प्रसादनारायण सिंह तथा  
 बाबू राम प्रताप नारायण सिंह ने वेद शास्त्र पुराणा  
 व्यवलोकन करिके सत मार्ग भाषा में ताके सब म  
 मुष्यों की प्रवृत्ति हो जाइवै प्रनेक सत ग्रंथों का प्रमाण  
 साथ देता हो नृणों कर्ते हैं इस पुस्तक का नाम मुमुक्षु  
 स्तन वो इसमें चारि भाग हैं प्रथम इश्वर नृणय द्वितीय  
 धर्मादि सिद्धांत उपासना ज्ञानादि नृणय चतुर्थ में



अनेक वस्तु है अथ मङ्गला चर्ण मत्स्यः कूर्मो ग  
 णेशः नरहरिस्तुलो वामनो जामदग्निः हंसो विष्णु  
 शिवादिस्सुरपतिविधिभिः कोटिदुर्गादयश्च ऐते वा  
 न्यपि सर्वे सकलसुरगणैर्यस्य याता कलां शैतं व्या  
 वृत्तं ब्रह्म तेजः सकलसुखकरं रामचन्द्रं नमामि ॥ अथ  
 इ स नृणाम् ॥ इस बात में शैवशिव को वैष्णव वि  
 श्नु को शाक्त शक्ति को इत्यादि अनेक मतन में अने  
 क प्रकार से इश्वरत्व प्रतिपादन किया है परंतु वेद  
 में और सतग्रंथों में केवल रामचन्द्र इश्वर लिखे हैं और वे  
 द क्या रूढ़ होना धर्म है वीतद्वय चलना अधर्म है त  
 त्रप्रमाण वेदो नारायणः साक्षात् तत्र धर्म सनातन  
 इति बृहन्नारदीयो तथा अर्थ वेद साक्षात् नारायण है  
 उसमें सनातन धर्म लिखा है ॥ श्लोक प्रशास्तविहिं  
 तं घोरं तद्व्यते चेतपो जनादम्भहंका संयुक्ता कामराग  
 बलान्विता श्रीमगवद्गीतायां लिखितं प्रथयेत् प्राणी प्र-



शास्त्रविहितघोरतपकर्तैर्हैतेदम्महंकाराजसं  
युक्तहै॥ वेदमेंसर्वोपरिपुरुषहैतत्रप्रमाणइन्द्रियेभ्यः  
परोऽर्थार्थाभ्यश्चपरान्नमनःमनसास्तुपराबुद्धि  
कुद्वेरात्मा महान्यरः महतः परमव्यक्तः मव्यक्तात्पुरु  
षः परः पुरुषान्मपरं किंचित्साकाष्टासा परागतिः  
इच्छतेः प्रर्थइन्द्रियो से परे प्रर्थ प्रर्थ से मनमन से बहु  
त परे प्रात्मा प्रत्मा से तत्त्व तत्त्व से परे जीव जीव से परे  
पुरुष पुरुष से परे कुद्वेनही है सर्वोपरि परमगति है  
इस से सूचितहुआ कि पुरुष सर्वेश्वर है सो पुरुष राम  
चन्द्र तत्र प्रमाण श्लोक न चैष पुरुष कश्चित् पुरु  
षोत्तम एव सः श्रीराम संज्ञितः धाम परब्रह्म सनातन  
इति शुकसंहितायां लिखितं ॥ प्रर्थ रामचन्द्र से पु  
रुष कोई परे नहीं है सो इ पुरुषोत्तम परब्रह्म सनातन  
है तथा श्लोक ॥ त्यक्त्वा सुदुत्यज सुरेशितराज्य ल  
क्ष्मी धर्ममीष्ट प्रार्थय च सा जगदादरायं ॥ ॥



मायासृगंदयितदुष्प्रितमन्वधावतवन्देमहापुरुष  
 तेचर्णारविन्दं॥ श्रीमद्भागवतेषुलिखितं॥ तथावेद  
 वेद्येपरेपुंसिजातेदसस्यात्मजेवेदप्राचेतसा। दासीसा  
 क्षाद्रामायणाणव॥ श्रीमद्वालिकेतथाधर्मात्मासंत्या  
 संधश्चरामोदासरथिर्जदियो। रूपचाप्रतिद्वंदंसरण्यज  
 हिरावाणिम इत्यादिपूर्वोक्तप्रमाणेसेसूचितहोताहै  
 कीकेवलरामचन्द्रपरंपुरुषहैऔरप्रमाणिकग्रन्थों  
 मेंज्योतिश्वरूपकोश्रीरामचन्द्रनैखज्योत्स्नालिखा  
 तत्रप्रमाण॥ पदद्वैतब्रह्मयसातनुभासरामचन्द्रःइति  
 श्रुतेः अद्वैतब्रह्मजिसेकसरीरसभासितहैसोराम  
 चन्द्रहै॥ पुनःसर्वेषांप्रवताराणांप्रवतारीरद्वैतमःराम  
 पादनखज्योत्स्नापरब्रह्मेतिगीयते॥ इत्यगस्त्यसंहि  
 तायां॥ तदग्रेनारयणतथाहंसादिमतवालेनारयणा  
 दिचौबीसप्रवतारोंकेशैवशिवकोशाक्तशक्तिकोंइ  
 त्यादिप्रनेकमतवालोंप्रनेकदेवतोंकोइश्वरत्वप्रति



पादनकर्ते हैं सो वेद और प्रमाण कव न्या से पूर्वोक्त स  
कल देवता श्री राघव के प्रज्ञावर्ती दास हैं तत्र प्रमाण ॥ त  
स्मिन्साकेतलोके विधि हर हरिभिस्सततं सेव्यमाने दि  
व्योसिहांसने श्रेष्ठ जनक तनपया राघव शोभमानः यु  
क्तो मत्स्यै रने कै किर भिरपि तथा नारसिंह रने कै कूर्म  
श्री नन्दनन्द हयगल हरिभि नित्य मन्त्रो मुखे श्रव्य रने कै  
श्राव वामनानरवरो नारायणो धर्मजः श्री हंसः हलधृ  
क तथा मधुरि पुष्पी वासुदेवो परः ॥ एते नैक विद्यामहे  
न्दु विधयो दुर्गादयः कोटि शः श्री रामस्य पुरो निदेश सु  
मुखानित्यास्त दीये पदे ॥ इति परम सहितायां इत्यादि प्र  
वोक्त प्रमाणों से केवल राघव सर्वेश्वर सूचित होते हैं ॥  
प्रवक्तृदापि कोइ को प्रनेक नबीन ग्रंथों के देखने से म  
मोत्पन्न होइ की हंसादि नारायण दि रूप को रामचन्द्र  
कहते हैं सो शास्त्रोक्त प्रमाणों से रामचन्द्र सर्वेश्वर न  
राकृतादि भुज है तत्र प्रमाण आनन्दोद्दि विधि प्रोक्तो म-



त्तिश्चामूर्तिरेव च प्रमूर्तिश्चाश्नयो मूर्तिपरमात्मानरा  
 कृतिः ॥ इति नारादपञ्चरात्रे ॥ स्थूलं चाष्टभुजं प्रोक्तं सू  
 क्ष्मं चैव चतुर्भुजं परं च द्विभुजं प्रोक्तं तस्मादितत्रयं त्य  
 जेत इत्यनन्दसंहितायां ॥ तथा ॥ यो वैवसतिगोलोके  
 द्विभुजश्च धनुर्धरः सर्वैर्निरक्षरातीतवरब्रह्मनराकृति  
 राम इति शिवसंहितायां तथा ॥ राम एव परब्रह्म राम ए  
 व परंतप राम एव परंतत्वं श्रीरामो ब्रह्मतारकम इत्यहं तु  
 मत्युपनिषद्ये ॥ ब्रह्मा विश्नु महेशा ध्यायस्यां सारलो क  
 सायकः तं रामं सा चिदानन्दं नित्यं रासेश्वरं भजे इत्यनु  
 मत्संहितायां इत्यादिवाक्यांसे मुमुक्षुर्को भ्रमद्वा डि  
 कैरायवको नराकृति सर्वेश्वर द्विभुज जानना चाहिण  
 तदग्रे जो वैश्नवशैव इत्यादि प्रनेकमतवाले प्रपने  
 प्रपने इष्टे को इश्वर कहते हैं सो शास्त्रप्रमाणसे सब  
 देवता श्रीरायवके चर्णां बुजरेखासे जायमान है तत्र प्र  
 माण येव तारा बिभोर्मुग्ध जायंते विश्वहेतवे जेमिरा



मां द्विचिन्हेभ्यः संभवन्ति पुनः पुनः महाभद्रो महाविश्वज्जी  
 यतेश्वस्तिकादीपितदंसेन समुद्भुतो विश्वर्त्तोकैकमं  
 गलः ॥ रेखोर्ध्वया महासंभुः महाजोगेश्वरो भवततेन  
 ब्रह्मा समुत्पन्नो भक्तियोगसिरोमणि शक्तिचिह्नान्म  
 हा माया तस्यो मा सारदादयः तस्या एव समुद्भुतं दुर्गाद्या  
 देवकृत्तमा मुकुटनष्टयुजा तोहंसाहंस इति स्मृत इति  
 महारां मायणो शिववाक्तेः प्रोमिन्नभिन्न सकलदेवतावो  
 किंचुत्पन्नकाः पारव्यान प्रादताली सधिप्रध्याय महा  
 रा मायणमलिखा है इहा प्रयोजनवस्य मुख्य मुख्य  
 देवतावो की उत्पत्त्य का कारण लिख गये है इत्यादि  
 पूर्वोक्ति महत्प्रमाणों से जस प्रवस्थामे सकलदेवता  
 श्रीराधा के चरणस्वु ज रेखा से जायमान है तो उनको स  
 र्वेश्वर मानना प्रनुचित है परंतु श्रीराधावके प्रावर्ण पा  
 र्श्ववर्तिक रिके मानना उचित है तदग्रे शास्त्रोक्त्वा  
 क्यों से चय प्रवस्था है त्रैगुण्य है प्रीरती नो प्रवस्था प्रीरती



नोगुणोकेविभुब्रह्माविशुमहेशादिहंप्रौएनकीशक्ति  
 अवस्थाहैसोमहतग्रंथोंकेप्रमाणसेनिस्त्रैगुण्यहोय  
 करिस्त्रयप्रवस्थाभेदनकरिकैतुरीयाख्यवस्थाप्राप्त  
 र्थहेतुसर्वेश्वरयोतुरीयाख्यविभुहैउनकीउपासना  
 कर्नाचाहिएसोतुरीयाख्यविभुएमचन्द्रहैतत्रप्रमाण  
 त्रैगुण्ययिषयावेदानिस्त्रैगुण्योभवार्जुननिर्द्वन्द्वौ  
 नित्यसत्त्वस्थानिर्जोगक्षेमभ्रात्मवान्॥ भगवद्गी  
 तायांतथाएषसर्वेश्वरएषसर्वज्ञः एषान्तयाम्येष  
 योनिःसर्वस्यप्रभवप्ययौहिभूतानानवंहिःप्रज्ञना  
 तःप्रज्ञनोभयतःप्रज्ञनप्रज्ञनाप्रज्ञनप्रज्ञानयमदृष्ट  
 मव्यवहार्यमग्राह्यमलक्षणमचिंत्यमव्यपदेश्य  
 मेकात्म्येप्रत्यपसारंप्रपंचोपशमिशिवमद्वैतंचचतु  
 र्थमन्यंतइतिसर्वस्याधिष्ठानंचासौसन्मात्रश्चनि  
 रस्ताविद्यातमोमोहःमायामायाभासेतिप्रविद्यात  
 त्कार्यराहित्येसप्रत्माविज्ञेयःसदोज्ज्वलोऽविद्यातका-



र्यहीनः स्वात्मबंधहरः सर्वदा द्वैतरहितः प्रानन्दरूपः  
 सर्वाधिष्ठानसन्मात्रो निरस्ता विद्यातमो हमेवेति  
 संभाव्यत्यहं मोतत्सद्यत्परं ब्रह्मरामचन्द्रश्चिदात्म  
 कः सोहमोतद्भ्रमभद्रपरमज्योतिरसोहमोमित्या  
 त्मानमादाय मनसा ब्रह्मणो को कुर्यान्सदाहमोह  
 त्येतत्त्वतः प्रवदंति ते संसारिणो नूनं राम एव न शंस  
 यः इच्छुतः तथा तूरीया जानकी प्रोक्ता तूरीयो रघु न  
 न्दनः उभयोरसंजा सर्वे चावताराश्च संख्यकाः ॥ सर्वे  
 षां प्रवतारणामवतारी धुत्तमः श्रुतं दृष्टं मया सर्वं चिर  
 यजीवनान्मुने ॥ इति श्री वेदहनुमत्युपनिषत्सु ॥ इ  
 त्यादि पूर्वोक्तप्रमाणे से निस्त्वै गुणयतूरीयाख्याधिपस  
 र्वेश्वर श्रीरामचन्द्रसूचित होते हैं तदग्रेसकलदेवमनु  
 ष्यादिक जो जीव संज्ञा है तथा माया प्ररु ब्रह्मयोक्षरा  
 क्षरानिरक्षरान्तर्गत है तिनसे परे यो निरक्षर तीत सो इ  
 सर्वेश्वर है सो शास्त्रोक्तप्रमाणों से रामचन्द्रसूचित होते हैं



प्रवप्रन्यकोर्द्वैश्वरत्वप्रतिपादनकर्णाप्रसतर्हेतवप्रमा  
 णमायामयादिकंसर्वपंचतत्त्वोद्भवंतनुदृष्टश्रुता  
 दिकंचैवक्षरमित्याभिधीयते व्यापकस्सर्वभूते  
 पुयस्पनाशकदापिन जीवात्मा सर्वगोमेध्यः सो  
 क्षरोभूधरात्मजो सर्वसाक्षी चिदानन्दो निद्वन्द्वो  
 खाण्डवजः परमात्मा परब्रह्म कथ्यते स निरक्षरः  
 प्रसंख्य मित्रवत्तेजो वेदाग्रपितृं विदुः सर्वे निर  
 क्षरातीतो रामः परतरात्यरः । यो वै वसति गोलोके द्वि  
 मुश्च धनुर्धरः ब्रह्मानन्दश्च यं रामयेन सर्वप्रतिष्ठि  
 तं ॥ भूतोक्षरोक्षरश्चासकलांचैव निरक्षरस्वयं नि  
 रक्षरातीतं सर्ववैजानकीपतेः ॥ इति शिवसंहितायां  
 तदग्रे वेदप्रमाणसेपणवमंचेश्वरप्रौरतदात्मकसर्व  
 श्वरहंसो वेदाक्तप्रमाणो सेरामचन्द्रप्रणवेश्वरसचि  
 तहोतिहेतवप्रमाणप्रकाराक्षरसंभूतः सो मित्राविश्व  
 भावनः उकारक्षरसंभूतसत्रुघ्नस्तैजसात्मकः प्रा



ज्ञात्मकस्तु भरतो मकारं क्षरं संभवप्रथमा ज्ञात्मको  
 रामब्रह्मानन्दैकविग्रह श्रीरामसानिध्यवसाया  
 गदाकारकारिणी उत्पत्तिस्थिति संहारकारिणी स  
 र्वदेहिनां सा सीता भवती ज्ञेयां भूतप्रकृति संज्ञिता प्र  
 णवत्यात्प्रकृतित्वं वदन्ति ब्रह्मवादिनां ॥ इत्यथर्वण  
 वेदे रामतापिन्यां तदग्रे परमोत्तमयो ब्राह्मण क्षत्रि  
 यादिवर्णोत्तमयो धर्म हैति सने अन्यधर्मवाले महद्दो  
 षत्तगावते हैं की इश्वरत्व बहुत प्रकार से वर्णन है सो  
 यथार्थ तो यह है की वेदशास्त्रादि प्रमाणिक ग्रन्थों में  
 इश्वरत्व सेवा इराद्यव मे अन्यतत्र प्रतिपादन नहीं है  
 और नवीन ग्रन्थों में बहुत्प्रकार से मत प्रतिपादन कि  
 आ है परन्तु पूर्वपराक्त प्रमाणों से सत नहीं है सिंद्धा-  
 न्त एह है की रामचन्द्र सर्वेश्वर परब्रह्म हैं शिव दुर्गा  
 नारायणादि प्रो न के प्रज्ञावती हैं तत्र प्रमाणानि ॐ  
 नमो भगवते श्रीरामचन्द्राय ॐ परमपुरुषाय पर



मदेवायपरमेश्वरायॐ तत्सब्रह्मसच्चिदानन्दश्चरु  
 पायप्रर्धमात्रात्मकाययेनेदंविश्वंभवतिस्थिति  
 नासंकलामात्रं चैनेदं ब्रह्माविश्वरूपादित्यान्क  
 लाकलांसैर्जायमानायेनसर्वेवताराकलाकलांसै  
 र्यायमाना इतिसामवेदेब्रह्मसूक्ते तथाप्रवतारावह  
 वः सन्तिकलाश्चासविभूतयः रामएवपरब्रह्मसच्चि  
 दानन्दमव्ययम्॥ इतियजुर्वेदे भरद्वाजसाखायां॥  
 तूरीयाजानकीप्रोक्तातूरीयोरघुनन्दनः उमेयो रं  
 सजासर्वेचावताराह्यसंख्यकाः इति अग्वेदे हनु  
 मत्युपनिषत्सु। रमन्तेयोगिनोनन्तो सत्या नन्द  
 चिदात्मनि इति रामपदेनासौ परब्रह्मविधीयते।  
 इत्यथर्वणवेदे रामतापिन्यां॥ वेदवेद्ये परे पुं  
 सिजातेदसरथात्मजेवेद प्राचेतसादासीत्साक्षा  
 द्रामायणाणवमृतयाप्नीयः श्रीयस्यात्प्रभवो प्र  
 मुश्च इति वाल्मीके। श्रीरामेति परं जाप्यं तारकं



ब्रह्मसंशिकं इति सनत्कुमारसंहितायाः ॥ अं सं  
 शैरामनात्मा अत्रयः सिद्धाभवन्ति हीवी जमोका  
 रासोहस्रमुक्तमिति श्रुतिः इति याज्ञवल्क्यसंहि  
 तायाः ॥ परात्परतरंतत्वं सत्यानन्दं चिदात्मकम् म  
 नसाशिरसानित्यं प्रणमामिरयुत्तमं ॥ इति सनत्कु  
 मारसंहितायाः ॥ नारायणोपिरामांशः शंखचक्र  
 गदाधरः इति वाराहसंहितायाः ॥ ज्ञानन्दरूपो नि  
 ष्यरिमाण एष लोके श्चेतस्माद्रमते इति साण्डिल्य  
 शाखायाः ॥ यथा ह्यादिप्रदीपेन सर्वदीपप्रबोधनं ॥  
 तथा सर्ववताराणामवतारी रघूत्तम इत्यगस्त्यसं  
 हितायाः ॥ विष्णुकोटिप्रतीपालं ब्रह्मकोटिविसर्ज  
 नं रुद्रकोटिविमर्दं वैमातृकोटिविनाशनम् ॥ का  
 मकोटिकलानाथं दुर्गाकोटिविमोहनं ॥ सर्वसौ  
 भाग्यनिलयं सर्वानन्दैकदायकं कौशिल्या न  
 न्दनं रामं केवलं ब्रह्ममव्ययम् ॥ महाशंभुसंहि



तायां। राप्त्रे तिलक्षी वचनमश्वापीश्वरवाचकः। ल  
 क्षीमतिगतिरामप्रवदन्तिमनीषिणः। राशब्दे विश्व  
 वचनो मश्वापीश्वरवाचकः विश्वानामीश्वरो यो  
 हियेन रामप्रकीर्तितः। रामं ते रमया सार्द्धं न रामं वि  
 दुते बुधाः॥ रमणं रमणस्थानं रामनाम विदो वि  
 दुः। इति ब्रह्मवैवर्ते। यस्यामलं नृपसदः सुयशो  
 धुनापि गायान्यघन्यनृपयो दिग्भेन्दुपटुं तन्न  
 कपालवसुपालकिरीटयुष्टं पादंबुजं रघुपते  
 स्सरणं प्रपद्ये श्रीमद्भागवते॥ पूर्णं पूर्णं च तारश्च  
 स्यामो रामरघुद्वहः प्रंसानृसिंहकृष्णाध्या रामस्तु  
 भगवान् स्वयं इति ब्रह्मजामलेः तथा शिवशिवः  
 स्यात्तमशिवो शिवश्च कृपानिधिर्दासरथिसः रामः  
 परात्परुक्षा विभुरास्यतंत्रो नयनिष्ठा जातिपरस्य  
 माहु इति स्कन्दपुराणेः सर्वसौभाग्यनिलयं सर्वा  
 नन्दैकनायकं कौसिल्या नन्दनं रामं केवलं ब्रह्म



म. व्ययं इति नाहं पंचरात्रे ॥ श्रीरामस्य कलांश  
 द्वैः प्रवतारः भवंति हि कोटि कोटिश्च कार्यार्थे  
 सिंधौ वीचीव मैमुनेः महाभारते असेषवेदात्म  
 कमादिसंज्ञं मजं हरिं विश्वमनंतमाद्यमप्रपार  
 संवित्सुखमेकरूपं परात्यरं राममहं भजामिः इ  
 तिसनत्कुमारसंहितायाः इत्यादिपूर्वोक्तप्रमा  
 णोंसे श्रीरामचन्द्रसर्वेश्वरसुचितहोते हैं अन्य  
 कोईश्वर कहना वा मानना वा ऐसे उत्तम धर्म  
 में बहुधा इश्वरत्व का दोख लगाना अनुचित है  
 ब्रह्माण्डानामसंख्यानां ब्रह्माविश्वहरात्मनाम्  
 उद्भवप्रलये हेतु राम एव परपुमान् इति यर्गुवेदे  
 हिरण्यगर्भसंहितायां तदग्रे श्रीरामचन्द्रने स्वायं  
 म्मुमनुवौ सतरूपाके तपसे मनुष्यावतार हो क  
 रस्वभक्त उद्धारनार्थ लीला किया वो उनको इस्व  
 रत्व गुण श्रीमद्वाल्मिकिय रामायणादिमें लिखा है



वौष्णीरामचन्द्रनेविरसिंहवौचीत्रलंकाकेनने  
 तथाजनकपुरवासियंइस्त्रियोंकेतपफलार्थकु  
 श्नावतारहोकरलीलाकियावौरामकृष्णमेंभेद  
 नाहिहैनारायणादिअन्यावतारश्रीरामकप्रसा  
 कलासेहैकृष्णस्वयरामहैंतत्रप्रमाणरामस्तुकृ  
 ष्णरूपेणरामरूपेणमाधवतयोर्भेदनकर्तव्यं  
 कृत्वापापमवाप्नुयातइतिसत्योपाख्याने॥तथा  
 विज्ञानफलदंदिव्यमोक्षकफलसाधनंनमस्क  
 त्यप्रवक्षामिरामकृष्णजगन्मयंइतिसनत्कुमा  
 रसंहितायां।सैवश्रीजानकीदेविबृषभानुसुता  
 भवत्श्रीरामस्तुतदासाक्षात्कृष्णरूपीदयानि  
 धैःइतिशुकसंहितायांवौविरसिंहकिकथाविस्ता  
 रपूर्वकसत्योपाख्यानमेंलिखाहैइत्यादिप्रमा  
 णोंसेरामकृष्णमेंभेदनकरनाचाहियेअरुश्रीरा  
 योंकीजोआदिसक्तिमहाभायाहैवहश्रीजानकीजु



हैं वौ प्रन्यमतवाले दुर्गी कालि रमा इत्यादि को प्रादि  
 सक्ति कहते हैं सो ए सब श्री जानकि जु की दा सप्रजा  
 वर्ति है तत्र प्रमाणान्नियस्या कला कलां सेन जाताना  
 र्यास्ति याव्यः सर्वे रामार्पितधिया जानकी पारिचारि  
 का इति अग्रे देहनु मत्युनिषत्सु । सीता कालां सा द्वह  
 वः शक्तय संभवन्ति ही या सां कला कलां सेन संभवन्ति  
 श्री यादयः । इति महाशंभुसंहितायां ॥ श्री राम सान्निद्धि  
 वसाज्जगदाकारकारिणी उत्पत्तिस्थिति संहारकारिणी  
 सर्वदेनां सा सीता भवती ज्ञेया मूलप्रकृति संज्ञता ॥ इ  
 ति श्रुतेः हरिहर कमलासनादिभूतिं तव करूणा वर  
 लद्धु मंगलम् । रघुवरवरव ह्व भैत्व दीये मगाणि त  
 धनव वन्धनं वै भवं न जाने इति मार्कण्डेय संहितायां  
 ब्रह्माविश्वरूपरूद्रश्च देवेन्द्रोऽग्रयस्तथा दुर्गी श्रि  
 यादयश्चैव जानकी पारिचारिका इति महाभास्वेन  
 पर्वणि इत्यादि पूर्वोक्त प्रमाणों से प्रवशिवा रमादिकों



आदिशक्ति कहना असत् है परंतु श्रीजानकीजूके  
 पार्श्ववर्तीदासीकरिके मानना उचित है प्ररुबहुतम  
 तेने बहुत प्रकारसे परमधामवैकुण्ठकैलाशादिकों  
 लिखा है परन्तु शास्त्रप्रमाणोंसे गोलोक परमधाम सू-  
 चित होता है तत्र प्रमाण महद्ब्रह्मकोक्षितेरुद्धमेकको-  
 टिप्रमाणतः। कोटिद्वयेन विख्यातं जनलोकं व्यव-  
 स्थितम्। चतुष्कोटिप्रमाणस्तु तपोलोको विराजितः  
 उपरिष्ठात्ततः सत्यमष्टकोटिप्रमाणतः अपः प्रव्याप्त  
 कौमारकोटिषोडशसंभवं॥ तद्दुर्द्धोपिरि संख्यातं मुमा-  
 लोकः सुनिष्ठितः शिवलोकस्त्वर्द्धन्तु प्रकृत्या च स-  
 मागतः विवश्वस्य परतो वृत्तिः शिवस्य पुरतो वहिः ए-  
 तस्माद्बहिरावृत्तिः सप्तावरणसंज्ञका। तद्दुर्द्धोकोटिप-  
 ञ्चाशत्कमादृशगुणात्परम्। भूमिरापो नलो वा वुखं  
 महच्चिधा परं प्रकृतेर्महामूलेन सप्तावरणसंज्ञकः  
 तद्दुर्द्धो सर्वसत्त्वानां कार्यकारणनामयम्। निलयं पर



मंदिव्यं महावैश्वनवसंज्ञिकम्। सहस्रमूर्द्धा विश्वात्मा  
 सहस्राक्षः सहस्रपात्। यन्मिषाञ्जगत्सर्वलयीभूतं  
 व्यवस्थितम्। उभद्वेन्तिविनश्यन्तिकालज्ञानविडम्ब  
 नैः। यदंशेन सहस्रं तावद्ब्रह्मा विश्वं महेश्वरः। एतं गु  
 ह्यतमस्थानं ददातु वाहितो हिता। तद्दुर्द्धन्तु परं दि  
 व्यं सत्यमनवस्थितम्। न्यासिनां योगिनां स्थानं भग  
 वद्भवनात्मनाम्॥ महाशमभुर्मोदते तव सर्वशक्ति  
 समन्वितः। तद्दुर्द्धन्तु परं कान्तं महावैकुण्ठसंज्ञिक  
 मवासुदेवादयस्तत्र विहरन्ति ह्यमायया तद्दुर्द्धन्तु  
 ह्ययं भातोगोलोकप्रकृतेतरः वाङ्मनोगोचरातीतः  
 ज्योतिरूपः सनातनः तस्य मध्ये पुरं दिव्यं साकेतमि  
 तिसंज्ञिकमकोटिसूर्यप्रतीकाशं परमानन्ददायक  
 म् तन्मध्ये जानकी देवी सर्वशक्तिनमस्कृता। तत्रा  
 स्ते भगवान् रामः सर्वदेवाशिरोमणिः इति हिरण्यग  
 र्भसंहितायाम् इश्वरकेनामग्नौ नैकैर्ह्येकैर्लभे फल



प्रदहं परन्तु रामनाम सर्वोक्तमहं तत्र प्रमाण॥ परमे  
 श्वरनामानि सन्त्यने कानि पार्वती परन्तु॥ रामना  
 मेदं सर्वेषां उत्तमोत्तमः॥ इति शिवसंहितायां॥ त  
 था रामरामेति रामेति रामे रामं मनोरमे सहस्रनाम  
 तत्तुल्यं रामनाम वरानने॥ इत्यगस्त्यसंहितायां॥  
 तथा नाम्ना सहस्रनामानियत्फलं लभते नरः तत्फ  
 लं लभते विप्रः रामनामैव कीर्तनात् इति ब्रह्मवैव  
 र्ते॥ जानना चाहि एकी सकल वेदशास्त्रादिने सम्प  
 र्ण पूर्वकथित वाक्यों का प्रमाण हजार श्लोक लिखा है  
 परन्तु एहां दो दो एक एक श्लोक प्रमाणार्थ लिखि दि  
 हा है अब सबकों चाहि एकी वेदमें वाक्या रूढ होकर  
 श्रीरामचन्द्रकों सर्वेश्वर सूचित करें और सगुन नि  
 र्गुण में सुक्ष्म भेद है की श्रीरामचन्द्र जब भक्तों के कार्यों  
 पर भक्त कृपा वतार लै करि कै सगुन कहलावते हैं वो  
 सगुन निर्गुण दोनो एक वस्तु है इस्वर नृण या रयानं



समाप्तं हति ॥ ॐ ॥

द्वितीय प्रथम धर्म सिद्धान्तान्तरान्न लिख्यते वेद में  
मोक्ष की ति निराह है प्रथम कर्म द्वितीयोपास  
ना त्रीतीय ज्ञान प्रथम पंथ कर्म का एह जि  
स्का सिद्धान्त कर्म करना चाहिये वो कर्म से  
मोक्ष है तत्र प्रमाणः प्रथा लोकर्म जग्यास्तुः इति  
पुर्वमिमासायां तथा कर्म एव संसिद्धिमास्थि  
ता जनकादयः लोक संग्रहमेवापि संप्रस्य  
न्कर्तुं मही सिद्धि भवद्गीतायां ॥ श्री कर्म काण्ड  
में कर्मोत्तम ब्रह्मण कर्म है श्री ब्रह्मण का इष्ट  
मंत्र गायत्री है गायत्र्यार्थ से ब्रह्मण का इष्ट जा  
नना चाहिये की गायत्री जिसका मंत्र है ओ ही ब्रा  
ह्मण का इष्ट है सो शास्त्र प्रमाण से गायत्री अधिक  
श्री गायत्री सूचित होती है तत्र प्रमाणानित तत्त्व



तुर्विंशत्याक्षरगायत्र्याख्यपरब्रह्मविद्याविला  
 सभूतं श्रीमद्गामायणं तदर्थं चतुर्विंशतिसह  
 स्रश्लोकैश्चकार इति श्रुते । तथा श्लोके च प्र  
 तिसाहस्रं प्रथमे प्रथमेकमात्रगायत्र्याक्षरमे  
 कैकं स्थापयामास वै मुनेः गायत्र्या त्रीणि चत्वार  
 रद्वे द्वे त्रीण्यथ षट्क्रमान् चत्वारिसप्तकाण्डि  
 पुस्थापिता । न्यक्षराणित्विति इति पद्मपुराणे  
 कृष्णवाक्यं ॥ कदाचित्कोई अक्षरार्थसे गाय  
 त्र्याधिपसूर्यको कहें तो प्रथमतः वेदार्थमनु  
 र्थां को कहना न चाहिये दूसरे जबकी महानु  
 भावश्री कृष्ण इन्द्रने मुखाम्बुजसे अर्थ कहा  
 है तब उसका अर्थ अन्य नहीं हो सक्ता तीसरे  
 ब्रह्मगाइविका देवता ब्रह्म हैं वो सूर्य ब्रह्म नहि  
 है तिससे भी सेवाइरामायणके अन्यार्थ नहि हो  
 सक्ता चौथे कदाचित्कोई नमाने तो अक्षरार्थ



भिरामचन्द्र परसुचित है तत्सव्य का प्रर्थ व  
 ह है प्रमाण तत् ब्रह्म रामचन्द्राय इति प्रसुत वो  
 सवितानाम रायौ का है भुर्भुवः स्वस्ति रस्तार  
 सविता प्रपितामहः इति महाभार्ते तथा स वि  
 तारघवः श्रीमान परमात्मा सनातनः इति व  
 सिष्टसंहितायां इत्यादि पूर्वोक्त प्रमाणों से ब्राह्म  
 णक्षत्रियादिकर्मकाण्डियों को रामोपासन हो  
 ना चाहिए अन्योपासन करना असत है तत्र प्र  
 माण श्रीसीताराममन्येन देवेन सह दुर्मति  
 साधारणं सकृधूते सौत्यजानात्यज्योः त  
 था चतुर्वेदी च जो विप्रों वासुदेवं न विन्दते वे  
 दभारसंमाकांता सर्वे ब्राह्मणगर्धपः इति ब्रह्म  
 ण्योक्तः ॥ श्रीकर्मकाण्ड में प्रथम दिक्षाधारेण  
 कर्म है परन्तु इसमें प्रनेक मत वाले प्रनेक  
 मंत्रग्रहणार्थ आदेश कर्ते हैं यथार्थ वेदप्रमाण



एसे ब्राह्मणक्षत्रियादि उत्तमवर्णी को सेवाइ  
 श्री मंत्रराज षडक्षर तथा द्वादशाक्षर राम  
 मंत्र को अन्य मंत्र अधिकार नहीं है तत्र प्रमा  
 ण। इत्येतत् ब्रह्मात्मिका सच्चितानन्दाख्या  
 इत्योपासितव्यमकारः प्रथमाक्षरे भवति  
 अर्धमात्रा चतुराक्षरे भवति बिन्दुः पञ्चमा  
 क्षरे भवति नादः षटाक्षरे भवति भवतारका  
 त्वात्तारको भवति तदेव तारकं ब्रह्मत्वं विद्धि  
 तदेवोपास्यमिति ज्ञेयं गर्भजन्म एं रामाय  
 नमः श्लेषात्तारकं ब्रह्म नामकं इति ब्रह्म सं  
 हितायां। मुमूर्षो दक्षिणे कर्णे यस्य कस्यापि  
 वा स्वयं उपदेक्ष सिमन्मंत्रं समुक्ते भवति स्व  
 यम्। इत्यगस्त्यसंहितायां। गत्वा गत्वानि नि  
 वर्तन्ते सूर्य चन्द्रादयो ग्रहाः नानि वर्तन्ति वै  
 राजो द्वादशाक्षरचिन्तकाः। तदग्रे कर्मकाण्डे।



को धनुषवर्णांकितप्रवस्यचाहि एतत्र प्रमाण  
 धनुर्वाणादिविन्धानां धारणांतिलका न्वितं  
 तुलशीकाष्ठमालाख्यंतं जानीतिसुवैभवम् ॥  
 इति ब्रह्माण्डपुराणे। रामायुधाभ्यां तप्ताभ्यां  
 संतापामुद्रयात्यहं किं तापेन हा प्राप्ते नि  
 त्यसुक्ताश्च नित्यदा। इति शिवसंहितायां। ध  
 न्वनांकितो धन्वनागाधन्वनाजीजर्यमुधन्व  
 नातीव्रासमदोजयेमधनुश्चोरपकामङ्गा  
 मिधन्वनासर्वाप्रदीशोजयं। इति श्रुतेः तदंग  
 कर्म्मकाण्डिका उर्ध्वपुण्ड्रतिलकतुलशी  
 काष्ठमालाधारणकरनासतहै प्रन्यतिल  
 कादिप्रसतहै तत्र प्रमाण उर्ध्वपुण्ड्रहरिप  
 दाकृतिमात्मनो निधारयति मध्याह्निद्रमूर्ध  
 पुण्ड्रयोधारयति सपरस्परप्रियो भवति इति  
 श्रुतेः उर्ध्वपुण्ड्रतुविप्राणांसततं श्रुतियो दि



तमउर्द्धुपुण्डोमृदासुभोललाटेयस्यदृश्य  
 तेसर्वपापविशुद्धात्माजरामर्णसंसारमहत्मा  
 यात्तारयतितितस्मादुच्यतेतारकमिति श्रुतेः त  
 राममेवपरमंमंत्रं ब्रह्मरुद्रादिदेवतागायत्र्यश्च  
 महात्मानोमुक्ताजत्वा भवांबुधौ एतन्मंत्रं  
 मंगस्त्यो वैजत्वा रुद्रत्वमाप्नुयात्। ब्रह्मत्वं  
 कास्यपंचैवकौशिकस्तुमुनेतसां इतिहारी  
 तास्मृतौ। राममेवजपेन्मंत्रं रुद्रस्त्रिपुरहा  
 रकः ब्रह्महत्यांविनिर्मुक्तो पूज्यमानोपि म  
 त्सुरैः इतिनारदपञ्चरात्रोपधारिरुद्रकाश्या  
 नुः सर्वेषां त्रिकजीविनां दिशेदेतन्महामं  
 त्रं तारकब्रह्मनामकतस्य श्रवणमात्रस्य  
 सर्वएव दिवंगताः सयाति हरिमन्दिररुद्रा  
 र्चनं विपुण्ड्रचयत्पुण्ड्रेषु गीयंते क्षत्रविट  
 शूद्रजातीनां नेत्रेषां तदुच्यते। इति वसिष्ठ



साहसायां धारणात्पालनात्सिक्तात्नमस्य  
 र्शनकीर्तनात्तुलशीदहतेपापंनृणांजन्मा  
 र्जितंखगद्विगरुडपुण्णोतदग्रेकर्मकाण्डी  
 कोअनेकरामव्रतादिप्रौरतत्तत्कालकेउत्सव  
 करनाअगस्त्योक्तमार्गसेउचितहैपरन्तुव्रतो  
 त्तरामनवमीजन्माष्टमीहैतत्रप्रमाणएवंयः  
 कुरुतेभक्त्याश्रीरामनवमीव्रतंप्रनेकजन्मा  
 सिद्धानिपातकानिवहनिवैभस्मीकृत्यव्रजे  
 त्येवतद्विष्टमोपरमंपदं। अकृत्वारामनवमी  
 व्रतंव्रतानांव्रतमुत्तमम्। व्रतान्यान्यानि कुरु  
 तेनतेषांफलभागमवेत्। इत्यादिप्रमाणिकव्र  
 तोत्सर्वोकाविधिनृणयादिरामार्चनचन्द्रिका  
 मेलिखाहैइहांकार्यीसूक्ष्मसेलिखागया  
 तदग्रेअनेकरामतीथादिदर्शनस्नानकरनाअ  
 वस्यचाहिए। परन्तुसर्वतीर्थोत्तमश्रीप्रयोध्या



बृन्दावनचिचकटादि परब्रह्म क्षेत्र है तत्र प्रमा  
 ण । या यो ध्या पुरी सा सर्व वैकुण्ठा पित्रेष्टं प्राधा  
 रमूल प्रकृतेः परा तत्स तब्रह्म मपी विरजोत्तरा  
 दिव्य रत्न कोट्या तस्या न्नित्य मेव सीता राम यो  
 विहर स्थल मस्त्विति श्रुतेः । तथा पुरातन मिदं  
 स्थानं मस्माकं तु तदेव ही कौशलाख्यं पुरं दिव्यं  
 फल एपि जिन स्वरम् । इदं चैलोक्य मखिलं प्र  
 लयेन विनस्पति । प्रविवस्वर मक्षैक मयो ध्या  
 पुर मभ्युतं । इति शुक संहितायां । परंतु स्वर्गति  
 श्रेष्ठ यो ध्येयं सुरदर्ल भा माहात्म्य तय श्रेष्ठ स्व  
 र्गादपि वरानना । स्वर्ग वासात् पुनर्जन्म मरण  
 विन्दते नृणां । प्रगा मृताश्च वैकुण्ठ मूर्द्ध गच्छंति  
 मानवाः प्रयो ध्यान समो किंचित् न स्वर्ग भूतले  
 मिया प्रकारो वा सुदेव स्या यकारस्तु प्रजापति  
 उकारो रुद्र रूपस्तु तां ध्यायंति मुनिश्वराः ब्रह्म



द्वमिदं भद्रे नास्त्यस्या उपमा क्वचित्तयस्य  
 पादतलो ज्जातो गंगा भागीरथी क्षितौ महिम्ना  
 धापि गंगाया पारशास्तेन दृश्यते सरज्ज्वा महि  
 मानं को वेत्य लोके च परिहृता इति सत्यो पारश्या  
 ने इत्यादि पूर्वोक्त कर्मो मे प्रनेक प्रसतमत वाले  
 प्रनेक पन्या रूठ कर्ते है सो पूर्वदत्त प्रमाणों से सि  
 द्धांत वस्तुयो है वह लिखा है कदाचित्त को इश्लो  
 कादि प्रसत प्रमाणों में है वह सत नहीं है तत्र प्र  
 माणा श्रीरामव्रतादन्यतव्रतं सर्वार्थसाधनमा  
 नरामराधनादन्यो यत्तावेदेपि दृश्यते रामदासा  
 त्यरोधर्मो यस्मिन्नन्यो निरुच्यते शास्त्रं तन्मे  
 श्वबुद्धानां विश्वसेन्न विचक्षणाः । इत्यगस्त्यसं  
 हितायां ॥ इस वाक्य से सूचित होता है की जो प्र  
 न्यनवीन शास्त्रादि मे प्रन्य कर्मों दि है वह हमेशा  
 कर्मों अधिकारी है प्ररु कर्म काण्डी को प्रसत्य भाष



एण परस्त्री रततस्करादिकर्म परद्रव्य ग्रहण हिं  
 सा मांसादि भोजनः प्रन्यदेवको इश्वरत्व प्रतिपा  
 दन महान्निन्दा इत्यादि महा पातकों कों न करना  
 चाहिये प्ररू कर्म प्रगस्त्यादि प्रमाणिक संहितो  
 क्तानु कूल करना चाहिए पूर्व से रामार्चन चन्द्र  
 कानाम ग्रन्थ में सभ प्रमाणिक कर्मों की विधि  
 लिखी है इस कारण से इस ग्रन्थ में नहीं लिखा पर  
 न्तु जिस जिस वाक्य में वाद था उसका पूर्वोक्त प्र  
 माणानु कूल सिद्धांत लिखा है प्ररू कर्म काण्ड कों  
 प्रस्नान देवार्चन दान हवन जज्ञ राम मंत्रादि पु  
 र चर्चा तडागादि उत्सर्ग व्रत तिथी टन व्रह्मण वैश्व  
 वादि सेवा इत्यादि कर्मों को करना उचित है पर  
 न्तु कर्म का फल मुमुक्षु को इश्वरार्पण करना चा  
 हिए तत्र प्रमाण। यत्करोसि यदक्षासि यज्जहो  
 सिददासि यत यत्तपस्यसि कौन्ते यतत्कुरुष्वम



दर्पणं भगवद्गीतायां इस्वरवाक्यं प्ररुच्यारिबर्ण  
 है चारोंका कर्म इस्वरने स्वयं श्रीमुखान्बुजसे  
 गीतामें कहा है उसके प्रन्कल कर्म करना चाहि  
 ये परन्तु सकल बर्ण समको रामो पासक होना वे  
 दवाक्य है तत्र प्रमाण चतुर्वर्णा समानां च राम  
 भक्त इति श्रुते ॥ \* ॥ इति संक्षेपतो धर्मादिसि  
 द्धान्ताख्यानं समाप्तम् ॥ \* ॥ अथ ज्ञानोपासना  
 ख्यानं लिख्यते ॥ वेदमें उपासना ज्ञानमें बहुत  
 सूक्ष्म भेद है जैसा निर्गुण और सर्गुन में वेदके द्वय  
 है प्ररूपों का सिद्धान्त भिन्न भिन्न है सब का  
 महत् सिद्धान्त रामोपासन होना वेदवाक्य है परन्तु  
 केवल लिखने से मनुष्यों के बिस्वास न होगा जब  
 भरिसभ शास्त्रों से सूचित न कि आ जाइ इसका  
 र्यावधि शास्त्रों में यो उपासना ख्यान में प्रदत्त है  
 प्रानका उत्तर लिखना प्रवस्य चाहि एप्ररु जब तक



प्रहसन कहा जाइ उत्तर उस्का यथार्थ भासित न  
 ही होता इस कार्य से सुगम भासा में ताके सभलो  
 गस मुभै शास्त्रों का प्रहोत्तर सहित ज्ञानो पासना  
 ख्य सिद्धान्त प्ररु सर्वो परियो राम भक्ति है वेद वा  
 क्या नुक्ल लिखा जाता है प्रथम पूर्व मिमांसा जि  
 स्का सिद्धान्त कर्मों पासना है जैमिन उस्के प्राचा  
 र्य है प्रहस प्रथम मोक्ष क्या पदार्थ है प्रो मोक्ष प्रा  
 प्ति की क्या यत्न है उत्तर मोक्ष स्वर्ग प्राप्ति होना है स्व  
 र्ग जन्म मर्ण से निवृत्त होना है सो वेद वा क्या रूढ हो  
 कर यज्ञ राम कृष्णार्चन कर्ना प्ररु मांसादि भोजन  
 असत्य भाषण परस्त्री रत इत्यादि दुस्कर्म्मों के न क  
 र्ना प्ररु वेद में जिस बात को प्रज्ञा कर्न वान कर्न की  
 नहीं है उस्को प्रहृष्ट मानना उस्के कर्न में न पुण्य  
 न पाप मोक्ष प्रप्ति की यत्न है मोक्षार्थ ज्ञानो पासना  
 का प्रयो जन नहीं है कांहे की जब दुस्कर्म्म प्ररु का



मना का त्याग हुआ प्ररु नित्य नैमित्तिक कर्मों से प्र  
 र्व जन्म सञ्चित प्रायश्चित्तना सहोग या तव जी  
 व जन्म मार्ग से निवृत्त हो जाता है इसी को परम मो  
 क्ष कहते हैं नित्य कर्म स्नानादि प्रौढ नैमित्तिक य  
 ज्ञादिक को कहते हैं प्रदोत्तर दूसरा जीव क्या पदा  
 र्थ है उत्तर जीव चेतन है परन्तु इन्द्रियों के सङ्ग से  
 सुख दुख भोगी है प्रदत्त तीय सुख सुख त्यागार्थ  
 क्या यत्न है उत्तर वेदवाक्यानुकूल कर्म कर्त्ता प्रदत्त  
 चतुर्थ संसार नित्य है की प्रनित्य है उत्तर प्रनादि है प्र  
 दत्त पञ्चम सुख दुख कि स्को होता है मृत्यु के प्रन्तर  
 जीव कहां प्राप्ति होता है उत्तर जीव को प्ररु मृत्यु  
 काल के बासनानुकूल शरीर में प्राप्ति होता है प्ररु  
 ह्नाम नामी में क्या भेद है प्ररु देवता क्या है प्ररु  
 मातृम कौन है कर्मोत्तम क्या है उत्तर नाम लक्षणा  
 है देवता मंत्र है कदापि किसी अन्य वस्तु को देवता



कहैं तौ यज्ञादिकर्मों में हजारों प्राहुति होती है तब  
 जो एक देवता है तौ हजार प्राहुति ग्रहण करि कैके  
 से फल रहता है इसे सूचित हुआ की मंत्र फल दे  
 वता है प्रह्म मंत्र से नारायण हि देवता हुए हैं केवल  
 साक्षी मात्र परम पुरुष मंत्रेश्वर है कर्म मेय ज्ञा  
 दिकर्मोत्तम है राम नाम नामोत्तम है जीव ईश्वर मे  
 अभाव है प्रतिमा चर्चन साधारण कर्म है इत्यादि पूर्व  
 मिमांसा सिद्धान्तानुक्ल सूचित होता है कि सर्व  
 श्वर साक्षी मात्र राम चन्द्र है प्रह्म मंत्र प्रह्म यज्ञाधिप  
 भी हो ही है तत्र प्रमाण साक्षी मात्रो यज्ञ भुगराम च  
 न्द्रः इति श्रुतेः । तथा मंत्रो मंत्रेश्वर श्री मान्कोशि  
 ल्या नन्दवर्धनः इति कस्यपसंहितायां ॥ इत्यादि  
 पूर्व प्रमाण से मैमासिकों को भी रामो पासक हो  
 ना चाहिये इति पूर्व मिमांसा ख्यानं समाप्तम् ॥ ३ ॥  
 अथ न्यायाख्यानं वक्ष्यामः । न्यायशास्त्र के गौत



मन्त्राचार्य्य है प्ररु कर्त्तानुकूल मोक्ष है प्रक्ष प्रथ  
म मोक्ष क्या है मोक्ष प्राप्त्यर्थ क्या यत्न है ॥ उत्तर ॥  
कइ श दोषों का नास होना मोक्ष है प्रो मोक्ष प्राप्त्यर्थ  
कर्मों पासना ज्ञान हेतु है प्ररु जीव को सो रह पदार्थ  
का ज्ञान साक्षात् मोक्ष है स्नानादिकर्म है सगुन ब्र  
ह्म ध्यानादि उपासना है प्ररु इश्वर मय संसारम  
नना ज्ञान है प्रक्ष द्वितीया पूर्वोक्त षोडस प्रकार का  
है उत्तर प्रमाण १ प्रमे २ संसय ३ प्रयोजन ४  
दृष्टान्त ५ अध्ययन ६ सिद्धान्त ७ तर्क ८ नृ  
णय ९ बोध १० जल ११ वितण्डा १२ हेतुभ्या  
स १३ हल १४ प्रणोत्तर १५ निग्रहस्तमान १६  
प्ररु सप्तपदार्थ प्रउभी हो द्रव्य १ गुण २ कर्म ३  
सामान्य ४ विषेस ५ समवाय ६ प्रभाव ७  
प्रक्ष तृतीय ॥ पूर्वोक्त एक विंशति दोष क्या है  
उत्तर पञ्च कर्म निद्रिय एक जने न्दीय ६ प्रो छ



प्रोक्ताज्ञान १२ अरु ६ प्रोक्तीविषय १८ सुख १९  
 दुख २० देह २१ प्रह्न चतुर्थ जीवक्या है उत्तर  
 जीवः प्रत्मा है व्यापक सुख दुख धर्मा धर्म भोगी  
 है प्रह्न पञ्चतत्वनित्य है की अनित्य उत्तर । अप १  
 तेज २ वायु ३ पृथ्वी ४ ए चाणेतत्त्व कार्यरूपा  
 निकारण रूपा नित्य है प्रोक्ता का सतत्वनित्य है प्रो  
 त्मा प्रोक्ता का लमन नित्य है प्रह्न प्रोक्ता प्रो  
 काश काल व्यापक है मन एक देशीय है प्रह्न  
 गुण व्यापक है प्रह्न ६ एक वस्तु में कई व्यापक  
 कैसे हो सकता है उत्तर जैसे एक वर्तन में रूप  
 रस गन्ध तीनों व्यापक है । प्रह्न ७ सृष्टिका क  
 र्ता कौन है । माया कौन है । उत्तर । इश्वर विभु  
 व्यापक प्रणव उस्कारूप है प्रो माया प्रणव से  
 जायमान है प्रो माया जीव के संसर्ग से संसा  
 र की उत्पत्ति है प्रो जीव कर्मान् कल्न इश्वर संसार



कीदृष्टकर्ता है प्ररु जिस प्रस्थामे की संसारकी  
 उत्पत्तिकही जाइ तौ नास भी है सो कारणरूपी जो  
 संसार नित्य है प्ररु स्थूलकार्यरूपी प्रनित्य है  
 प्ररु प्रात्मा की उत्पत्तिकही जाइ तौ नास चाहि  
 ए प्ररु प्रात्मानित्य है काहे की प्रमाण तीनि है प्र  
 थम मध्यम परम महता सो प्रात्मा परम महत्प्र  
 माण है। इसे नास मान ही है प्रद्व ॥ ८ ॥ जीव प्रा  
 त्मामे के गुण है। उत्तर। बुद्धि १ सुख २ दुख ३  
 इक्षा ४ यत्न ५ इर्ष्या ६ संज्ञा ७ प्रमाण ८ प्र  
 थम ९ संयोग १० विभाग ११ भावना १२ धर्म  
 १३ अधर्म १४ प्रद्व ९ ॥ प्रमात्मा के क्या गुण हैं  
 उत्तर ॥ बुद्धि १ इक्षा २ यत्न ३ संज्ञा ४ प्रमाण ५  
 विभाग ६ प्रथक ७ संयोग ८। प्रद्व ॥ १० ॥ सु  
 ख दुख भोक्ता कौन है। उत्तर। स्थूल सूक्ष्मा श  
 रीर भिमानानी जीवात्मा। प्रद्व ॥ ११ ॥ परलोक



सत्य है की असत्य है ॥ उत्तर ॥ सत्य है ॥ प्रश्न ॥ १२ ॥  
 नाम नामों में भेद क्या है श्री नामों क्या है ॥ उत्तर ॥  
 नाम नामों में एह भेद है राम नाम नामोत्तम  
 है ॥ प्रश्न ॥ १३ ॥ सर्वोपरि कवन कर्म मोक्ष  
 दा है ॥ उत्तर ॥ कर्म यो कता है श्री ही फल पाव  
 ता है इसे कर्ता प्रधान है ॥ प्रश्न ॥ कर्म का फल दा प्र  
 णावात्मक इश्वर है इत्यादि न्याय मतानुकूल  
 से प्रणावात्मक सर्वेश्वर सूचित होता है सो प्रण  
 वात्मक राम चन्द्र है ॥ तत्र प्रमाण ॥ अकारक्षर  
 संभूत सोमि त्रैविश्व भावनः उकारक्षर संभूत  
 सत्रुन्धः तैसात्मकः प्राज्ञात्मकस्तुभरतोम  
 कारक्षर संभवः अर्धमात्रात्मको राम ब्रह्मा न  
 न्दैक विग्रह ॥ श्री राम सानिध्यवसाज्जगदाका  
 रकारणी ॥ उत्पत्ति स्थिति संहार कारिणी सर्व  
 देहीनां सा सीता भवती ज्ञेया मूल प्रकृति संभवा



प्रणवत्वात्प्रकृतित्वंवदन्ती ब्रह्मवादिनां ॥  
 इत्थं वर्णवेदे रामतापिन्यां ॥ इस प्रमाणसे  
 न्यायशास्त्राधिकारियों को भी रामो पास न हो  
 ना चाहिए इति संक्षेपतो न्यायशास्त्रसिद्धान्त  
 ख्यानं समाप्तम् ॥ प्रथमं सारव्यपातञ्जलिमतं  
 वक्ष्यामः ॥ सारव्यशास्त्रके कपिलदेवपातञ्ज  
 लिशास्त्रके पातञ्जलिप्राचार्य हैं। सारव्यपातञ्ज  
 लिके सिद्धान्तसमस्त एक है इस्कार्य से दुनो एक  
 त्रलिखे गए। प्रथम ॥ मोक्षक्या चीज है मो  
 क्षकी क्या यत्न है। उत्तर ॥ पुरुषप्रकृतिका समा  
 ध्यवस्थागत होना ॥ प्ररू ॥ चेतनको चैतन्य  
 होना मोक्ष है ॥ प्रथम ॥ चित्तनिरोधकर्त्ता चाहि  
 एताके वैराग्य उत्पन्न होइ ॥ मोक्षाधिकारिद्वय  
 है उत्तमनिकिष्ट ॥ निकिष्टमोक्षाधिकारी को कि  
 या प्रष्टाङ्ग योगकर्त्ता चाहिए। प्ररू। उत्तमाधिका



रीकों प्रयोजन क्रिया की नहीं है। उसको प्रथम वैराग्य  
 फेर। अभ्यास होता है सांख्य पातं जलिका सिद्धान्त  
 इह है की। ज्ञान वस्था में भी प्रकृति कालै नहीं है ॥  
 पुरुष प्रकृति दुनो नित्य है परन्तु। ज्ञान से प्रकृति  
 का प्रभाव हो जाता है जैसे होमनुष्य सैन वस्था  
 में संभाषण नहीं कर सकते हैं तैसे मुक्ति वस्था में  
 प्रकृति प्रपने को समाधि मे रहो प्ररु पुरुष प्रपने को  
 प्ररु। ३। प्रकृति पुरुष में क्या भेद है। उत्तर। प्रकृति  
 त्रैगुण्य युक्त है प्ररु पुरुष केवल चैतन्य रूप है ॥  
 प्ररु। ४। मोक्ष की क्या युक्ति है। उत्तर। प्रथम यम  
 नेम प्राण। या म प्रत्याहार धारणा ध्यान समाधि  
 क्रिया प्रष्टाङ्ग योग से वैराग्य प्ररु ॥ वैराग्य से अभ्यास  
 स अभ्यास से सङ्ग त्याग करने से मोक्षा वस्था  
 को प्राप्त होता है प्रकृत्यालय अभ्यास से प्ररु उसे  
 मोक्ष होता है अभ्यासात् प्रकृतिलयः इति सांख्यसू



वः। प्रश्न। ५। जीवक्या है ॥ उत्तर ॥ जीव इश्वर सर्वव्या  
 पक है सांख्य पातञ्जलिके सभ सिद्धान्त मिलते है  
 केवल एतना विरोध है कि सांख्य वाले जीव को स्व  
 त ब्रह्म मानते है पातञ्जलिनहीं। परन्तु। पातञ्जलि  
 सूत्र में लिखा है की सांख्य में भी इश्वर को मानता  
 है ॥ परन्तु केवल मुमुक्षु के ऐश्वर्य इहानिबृत्त्य  
 र्थ ऐसा लिखा है की जब भी मुमुक्षु स्वतः इश्वर  
 अपने के न मानेगा तब भी उसको इह ऐश्वर्य  
 की रहेगी ऐश्वर्य परलोक बाधक है इसे मोक्षन  
 ही होगा ॥ प्रश्न। ६॥ सृष्टिकर्ता कौन है माया क्या  
 है। उत्तर। पुरुष प्रकृति का संयोग अगतकार  
 ण है प्ररू ॥ माया का स्वरूप रजतम सत है सं  
 योग कारण प्रविद्या है। प्रश्न। ७॥ जक्त सत है की  
 असत है ॥ उत्तर ॥ भ्रम मात्र जक्त चैतन प्रकृति  
 को भासता है ॥ प्रश्न ॥ सुख दुख कि स्को होता है



उत्तर चितको ॥ प्रश्न ॥ ८ ॥ परलोक क्या है ॥ उत्तर ॥  
 किहु नहीं ॥ परन्तु सुभा सुभकर्म कर्ता प्रज्ञानों  
 को स्वर्ग नर्क प्राप्ति होता है ॥ प्रश्न ॥ ९ ॥ नाम क्या है  
 उत्तर ॥ प्रर्थ का वाचक है ॥ प्रश्न ॥ १० ॥ सभ से श्रेष्ठ  
 कौन है ॥ उत्तर ॥ पुरुष ॥ इत्यादि सांख्य पातञ्ज  
 लिसिद्धान्तावा लोकन से पुरुष सर्वो परिसूचित  
 होता है सो पुरुष राम चन्द्र है ॥ तत्र प्रमाण ॥ नमो  
 भगवते परम पुरुषाय श्री रामायति श्रुतेः ॥ प्रब  
 सांख्य पातञ्जलि मताधिकारियों को भी रामो  
 पास कहोना चाहिए इति सांख्य पातञ्जलिसि  
 द्धान्ताख्यानं समाप्तम् ॥ ॥ प्रश्न प्रथम ॥ मोक्ष  
 क्या है मोक्ष प्राप्ति का क्या यत्न है ॥ उत्तर ॥ अपने  
 स्वरूप को जानना स्व स्वरूप में मिलना मोक्ष है  
 प्रथम कर्मों पासना से मन पवित्र होता है ॥ पु  
 निवेदान्त शास्त्र के श्रवण मनन ध्यासन से-



ज्ञान होता है तब स्वस्वरूप में मिलता है प्रसन्न॥  
 जीव क्या है। उत्तर। सच्चिदानन्द निर्विकार व्या-  
 पक है॥ तत्त्वमसि महावाक्य में लिखा है जिसका  
 इयं ह्यर्थ है की तत् शब्द का की तू ही जीव है चि-  
 त्त चैतन्य है आनन्द प्रणाम रूप॥ जीव ब्रह्म से कु-  
 छ भेद नहीं है॥ जैसे जल प्रो बुन्द का संयोग है  
 बुन्द का समूह नदी प्रो एक बुन्द केवल बुन्द का  
 हावता है॥ परन्तु॥ मधुरता शीतलता दोनों में है  
 परन्तु बिषे बिषे पण करि कै बुन्द सागर से प्राया  
 अरु बुन्द का समूह फरि सागर हो सकता है ऐस  
 ही जीव ब्रह्म है चैतन्य है सुख दुख धर्मा धर्म  
 माया कृत कारण मात्र जीव चैतन्य को नहीं है  
 सृष्टिकर्ता को नहीं माया क्या है॥ उत्तर॥ इश्वर  
 व्यापक है जैसे सूर्य प्रो किरण एक वस्तु है तैसे  
 जीव इश्वर प्रो उदाहरण एक स्त्री वाप के घर बेटी पति



के घर बहू कही जाती है परन्तु स्त्री एक है तैसे मा  
 या के दोष से इश्वर जीव कहावता है। यथार्थ दो  
 नों एक है प्ररू माया को नित्य कहा जाइ तौ ज्ञानो  
 दय से माया का धर्म नास हो जाता है औ नित्य  
 कहैं तौ जब हैं नही तौ कहां से होती है इस्कारण  
 से माया न सत है न प्रसत उदाहरण सूर्योदय से  
 रात्रिका प्रभाव प्ररू सूर्य स्त में फिर रात्रि होती  
 है जो रात्रि हैं नही तौ कहां से होती है तैसे ब्रह्मिसे  
 माया का प्रभाव हो जाता है परन्तु माया ब्रह्म  
 की इच्छा औ तदाधीन है ॥ प्रस ॥ जक्त सत है की  
 प्रसत प्ररू जक्त स्वप्न स्थिति में क्या भेद है ॥ उ  
 त्तर ॥ जक्त प्रहन्कारो भद्वं प्रसत है जक्त स्वप्न स्थ  
 ति में केवल प्रल्प काल वौ दीर्घ काल का वाचा  
 मात्र भेद है वौ अग्यान कर के बुद्धि को भासता है  
 इ बस्तु जैसे इश्वर १ जीव २ अविद्या ३ ब्रह्म ४



वीष्णुविध्याकाचैतन ५ वीसम्बोधवीप्रनादि  
 वस्तुकाभेद ६ एहस्वरूपकाप्रनादिहै जा  
 ग्रतजक्तस्वप्नसृष्टमेबडाभेदनहीहै उदा  
 हरणा जैसे स्वप्नवस्थामे प्रसत्यवस्तुदेखाईदे  
 ताहै परन्तु जाग्रतवस्थामे वह प्रसत प्रज्ञान  
 मात्र सूचित होताहै तैसे प्रज्ञानवस्थामे सं  
 सार सतजनवस्थामे प्रसतहै ॥ प्रस ॥ सुख  
 दुखकिस्कोहोताहै प्रीमृत्युके पश्चात जीव  
 कहां जाताहै ॥ उवर ॥ सुखदुखप्रतस्करणका  
 धर्महै परन्तु संगदोषसे चैतन्यने प्रपने में  
 मानलिहाहै ॥ कर्मकेनुस्वारसे सुखदुखहो  
 ताहै प्ररु ॥ ज्ञानीका जीवकही गवननही क  
 र्ती वासना उसकी नासमानहै प्ररु प्रज्ञानी  
 का जीव प्रासावहु गवनकर्तीहै ॥ उदाहरण  
 भोजनबनावने में जो परार्थस्थानीमें रहताहै



ओही गिरता है तैसे प्रासा आधार पात्र है कर्मा  
 नुस्वारिणी बुद्धि प्रन्त में कर्मा नुकूल जीवकों  
 प्रासा प्ररुत दनुकूल जीव वासना में गगनकर्ता  
 है मनचित प्रहन्कार बुद्धि को प्रन्त स्कर एक  
 हने हैं प्ररु प्रन्त में सभ एक वस्तु है ज्ञान प्राप्ति से  
 वासना की नास हैं प्ररु वासना नहीं है तो जी  
 व गगन नहीं कर्ता स्वतः प्राप्ति प्रस्थान में स्वस्वर  
 पबोध करि कै ब्रह्म है प्रस ॥ परलोक क्या है ॥ उ  
 त्तर ॥ परलोक स्तोति मात्र है प्रसत जैसे स्वप्नाव  
 स्था में संसार के व्यवहार सत्य परन्तु ज्ञानवस्था  
 में प्रसत तैसे प्रज्ञान करि कै स्वर्ग नर्क दिव्यवहा  
 र जीव को भासित होता है परन्तु ज्ञान से जीव  
 स्वतः ब्रह्म है ॥ स्वर्ग नर्क किस्को होइ इत्यादि वे  
 दान्त वाक्यों से सूचित होता है की इश्वर जीव में  
 नदी बुन्द का भेद है जानना चाहिए बुन्द नदी के



प्राधीन है सो नदी रूपी इश्वर राम चन्द्र बुन्द रूपी व  
ह्मादिक देवता इत्यादि सकल जीव तत्र प्रमाण  
ययतो इमानि भूतानि जायन्ते प्रलीयन्ते इति श्रु  
तेः ॥ इस संक्षेप तो वेदान्ताख्यानं समग्रम् ॥ इत्यादि  
शास्त्रों में अनेक प्रकार से मोक्षोपाइ लिखी है पर  
सब का सिद्धान्त रामोपासना है परन्तु मुमुक्षु को  
अनेक पंथ देखने से भ्रम होइगा की कौन पंथ य  
थार्थ है जथार्थ ए सब मत है परन्तु जथाविधि पु  
र्वक साधन कठिन है मैं मांशा में कर्म प्रधान न्या  
य में कर्ता वेदान्त में जीव ब्रह्म का प्रभेदान्यै इत्या  
दिक ठिन वस्तु का साधन जथार्थ कलि में नहीं  
बन्ता प्रव देखना चाहि एकी जे साधन भी व  
नै वो सर्वोपरि मत भी हो सो वेद वाक्यानुकूल  
राम भक्ति है तत्र प्रमाण न स्यादन्य शिवः पंथाम  
सितो विजीतात्म निवास देवो भगवति भक्तिर्ज



त्रभविष्यतीति भागवते तथा सप्तकोटि महा  
 मन्त्रश्चीतविभ्रमकारकः एक एव परमंत्रो  
 मइत्याक्षरद्वयममनुस्मृतौ ग्रहं विधाता गरुड  
 ध्वजश्च रामस्य बाले क्षमुपासकानाम् ॥ गुण  
 ननन्तान्कथितुं न सक्तः ॥ सर्वेषु भूतेष्वपि पावना  
 स्ते इति शिवाक्यं महा भार्गव ॥ कथा च सा धनं सिद्धि  
 भक्तिं श्रीमैथिलीपतेः प्रन्यंतु केवलं श्रमं सधितं  
 मतसाधितं मतवादिभिः ॥ इति प्रगस्त्य संहितायां  
 सर्वेषां वेदसागराणां रहस्यन्ते प्रकाशितं भक्तिः श्री  
 जानकीनाथव्रतमन्यं नतत्समम् ॥ पागसरस्मृ  
 तौ ॥ पार्वत्युवाच ॥ सर्वज्ञ सर्वलोकेश सर्वदुर्बनि  
 षुदनः ॥ सर्वेषां सुगमपन्थाको मे वद दयानिधे ॥  
 महादेव उवाच ॥ ऋणेष्ववहिता देविय देतस्य  
 ति पद्यते ॥ सर्वेश्वरः सर्वमयः सर्वभूतहिते रतः ॥  
 मुमुक्षुनां हितार्थी यस्य कारो भूत रत्नोत्तमः ॥ इत्यग



स्त्यसंहितायां ॥ एष निष्कंठकः पन्थाय त्रसं प्र  
 ज्यते हरिः ॥ कुपंथतं विजानीयाद्भो विन्द र  
 हितागमं ॥ इति महाभार्ये ॥ सर्वगुह्यतमं भूयश्च  
 णु मे परमं वचः ॥ इष्टो सि मे दृढमति तोस्ततो व  
 द्यामि ते हितम् ॥ मनसना भवमद्भुतो मद्याजी  
 मानमस्कुरु मामेवैष्यसि सत्यं ते प्रतिजाने प्रि  
 यो सि मे ॥ सर्वधनमानपरित्यज्य मामेकं शरणं  
 ब्रज ॥ ग्रहंत्वां सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मासु  
 च ॥ इति भगवद्भितायाम् ॥ इश्वरवाक्यं ॥ मुग्धे  
 ष्ट एष्वमनुजोपि सहस्रमध्ये धर्मव्रती भव  
 तिसर्वसमानशीलः तेष्वेव कोटि सुभवे द्विष  
 ये विरक्तः सङ्गानको भवति कोटि विरक्तमध्ये  
 ज्ञानीषु कोटि पुण्ड जीवनकोपि मुक्तः कश्चि  
 त्सहस्रनरजीवनमुक्तमध्ये विज्ञानरूपविम  
 लोप्यथ ब्रह्मलीनः तेष्वेव कोटिषु सकृत्खलौ



रामभक्तः। इति शिवसंहितायाम्॥ नातः पर  
 तरं वेद्यः रामात्रैलोक्यनायकात्॥ एक एव परं  
 ब्रह्म रामो वेदेषु गीयते। इति श्रुत्वा विनिश्चित्य  
 श्रीरामचरितं मया निर्मेध्य सर्वशास्त्रेभ्यः सं  
 चितं पठितं स्मृतं स्थापितं हृदये नित्यं सर्वस्वं प्रा  
 णजीवनं॥ इति शुकसंहितायाम्॥ सर्वैः पुंसां प  
 रो धर्म्मो यतो भक्तिरधोक्षजे प्रहैतुव्यप्रतिहता  
 ययात्मा संप्रसीदती। अकामः सर्वकामो वामोक्ष  
 काम उदारधी। तीव्रेण भक्तियोगेन भजेत पुरुष  
 परम्॥ परिनिष्ठितो स्मिन्नैर्गुण्यः उत्तमश्लोक  
 लीलया ग्रिहीतचेतारजर्षे प्राख्यानं यद्विद्वत्  
 वान् श्रीमद्भागवते प्रतः पुंमिर्द्विजश्रेष्ठवर्णा  
 श्रमविभागशः स्वनुष्ठितस्य धर्म्मस्य संसिद्धि  
 र्हीतोषणं॥ तस्मादेकेन सा भागवान्सा त्वतां प  
 ति॥ श्रोतव्यकीर्तितव्यश्च ध्येयः पूज्यश्च सर्व



दा ॥ इति भागवते ॥ प्रथमस्कंधे ॥ ये राम भक्ति  
 ममत्तां सुविहाय रम्याज्ञाने रता प्रतिदिनं परि  
 क्लिष्टमार्गे प्राणान्महेन्द्र सुरभिं परिहृत्य मूर्खा  
 प्रकंभ जन्ति सुभगे सुखदुग्धहेतुः ॥ इति शि  
 वसंहितायां इत्यादिवाक्येणै राम भक्ति इत्या  
 दिपूर्वोक्तप्रमाणेणै राम भक्ति सर्वोपरि सुलभ  
 मोक्षदापेय है राम भक्ती मेदास सखा वात सत्य  
 स्तिंगार इत्यादि प्रनेक भाव है वो मोक्ष सब से  
 होत है तव प्रमाण राम रूप स्यते जोग्य जीवो वेद  
 प्रमापित मभेदो मतस्य सर्वेषामचार्याणवदा  
 मितोदास वज्जेभि जानंति दासास्तेषामिति स्मृ  
 ताये जानंति सखा तुल्यं सख वत्तानथोद्यतः ये  
 पश्यंति सखी भावं सखित्वं प्राप्नुवंति ते ब्रह्मात्म  
 कंच त जीवंतेषां ब्रह्म इति स्मृतः इति महारा  
 मायणे प्ररु भक्तिं प्रनेक प्रकार से लिखा है परन्तु



नौ धाभाक्ति बहुत मुख्य है वौ भक्तन को जो  
 मोक्ष सर्वोपर पदार्थ है उसकी भी इक्षान ही  
 रहति तत्र प्रमाण न ना कष्ट न च सार्वभौ  
 मन पार मेष्ठ्य न रसाधिपत्यं न योग सिद्धि र  
 पुनर्भवं वा वाच्छन्ति यत्पाद रजः प्रपन्नाः प्र  
 ह्नुः प्रन्यमतवाले यो मोक्ष के वास्ते प्रतिसय  
 सम करते हैं सो तिस पर भी नहीं पाते प्रह्नुगम  
 भक्तन को विना परिश्रम लब्ध है तत्र प्रमाण  
 येन्ये रविन्द्राक्ष विमुक्त मानिनस्त्वयि स्तभा  
 वाद विशुद्ध बुधयः प्रारूक्षन्तु हेण पं पदं  
 ततः पतंत्य धौ नादृत युष्मदंष्ट्रयः तथान  
 ते माधवतावका क्वचिद्द्रश्यन्ति मार्गीस्त्व  
 यिवद्दुशौ हृदा त्वया भिगुप्ता विचारन्ति नि  
 र्भया विनायकानीक पमूर्धेषु प्रभो प्रह्नुजव  
 मनुष्यमाया से छूटे गातव मोक्ष होगी सो सेवा



भगवद्भक्तके सर्वमायाक हेतवप्रमाण  
 वीह्ये शा गुण मयीममभायादुरत्ययामामेव  
 येप्रमद्यन्तेमायामेमेतांतरन्ति ते शरुभक्तन  
 कोवस्य स्वयं इश्वर है प्रवउतसे सेष्टकवन  
 होसक्ता है तत्र प्रमाण नवमभागवते भगव  
 क्यं ग्रहं भक्त परधीनो ह्यस्य तत्र इव द्विजसा  
 धुमिर्मस्त हृदयो भक्तैर्भक्त जनप्रियनाहमा  
 त्माननाशासेमभक्तैः साधुभिर्विनाश्रियं  
 चात्यंतिकी ब्रह्मन्येषां गतिरहं परायेदागार  
 पुत्राप्तानप्राणान्वितामिमं परं हित्यामांशर  
 णं याताकथं तां त्युक्तुमुत्सहेमायिनिर्वुद्धि  
 द्यासाधवः समदर्शनाः वश्यं कुर्वति मां भ  
 क्त्या सत्स्त्रियः सत्यतियं यामत्सेवया प्रतीति  
 च सा लोवयादिचतुष्टयं नेच्छन्ति सेवया प्र  
 णीः पुता न्यक्ता लविद्वत्साधके हृदयं मया



साधूनां हृदयं त्वहं मदन्यते न जानंति नाहं  
 तेभ्यो मनागपि तथा च श्रीमद्भगवद्गीतायां  
 भगवाद्वाक्यं प्रनयेक्षुषुचिर्दक्षः उदासीनो  
 गतव्यथः सर्वारंभपरित्यागी यो मभक्तः स  
 मे प्रियः यो न हृष्यति न द्वेष्टि न सोचति न का  
 क्षति शुभाशुभयोरित्यगी भक्तिमान्यः से प्रियः  
 सः श्लोचमित्रे च तथा मानापमानयोः सीतो  
 षा सुखदुखेषु समः संगविवर्जितः तुल्यनि  
 दास्तुतिमौनी संतुष्टो येन केनचित्प्रनिकेतः  
 स्थिरमतिर्भक्तिमान् मे प्रियो नरः ये तु धन्यास्तु  
 तमिदं यथोक्तं ययुर्पासते श्वहृधानामत्यग्ना  
 भक्तास्ते तीव्रमे प्रियाः इत्यादि पूर्वोक्तप्रमाणे  
 ते रामभक्त सर्वोत्तमहं प्ररुणमभक्तितीति प्रका  
 रकीहै उत्तममदिमनिकिपू प्ररुतिन्यौकायथा  
 र्यमिदुन्तयहैकी दिवान् भगवन्मयरहै प्रथम



भक्ता नुगामी को गुरुके सत्ता संते दीक्षा चाहिये  
 फेरि भगवत्कथा श्रवण की जनतथा भगवद  
 चनदृत्यादि अनेक प्रकारों से मन को तन्मय  
 करना चाहिये इसके कर्म लक्षण भक्ति क  
 हते हैं इसके अभ्यास ते प्रेम लक्षण भक्ति प्राप्ति  
 होती है प्रेम लक्षण भक्तिकालक्षण एह है की  
 प्रेम से तन्मय होइ जायतत्र प्रमाण एवं व्रत श्रु  
 प्रिय नाम कीर्त्योपातानुरागोदुतचित्त उच्चैः ह  
 सत्यथोरोदतिरौति गयत्युन्मादवन्मृत्यति  
 लोकवाह्यः अरु भक्तन को ध्यान मार्ग करिके  
 भगवद्रूप मनन करिके भगवत्यदाम्बुजमेख  
 मनमृग करना चाहिये सो ध्यान की युक्ति एह  
 है कि एकाग्र मन करिके भगवद्रूप में मन लगा  
 वैवो जो जो प्रगधारण में ध्यान मार्ग सो देख  
 ने लगे तो अन्य दंग में धारण करै अथातो ध्यान



श्लोकानितस्यमद्धेपरं दिव्यं रत्नमंण्डपमुतम  
 मतन्मद्धेवेदिकारम्यास्वर्णरत्नविनिर्मितीता  
 न्मद्धेपरमंदिव्यं रत्नसिहाशनं शुभं सहस्रनाम  
 हापद्मकार्णिकारैः समुत्तमतन्मद्धे मुद्रिका  
 भिन्नं सुद्राक्षाभ्यां विमिन्नकं वन्हीन्दुमाण्डले  
 नापिवेष्टितं विन्दुभूषितम् चंद्रकोटिप्रतीका  
 शंहुत्राकं सचामरमसदामृदुधनशाविमुक्ता  
 रामवितानकमतन्मद्धे जानकीदेवी सर्वशक्ति  
 नमस्कृता तत्रास्ते भगवानरामः सर्वदेवशिरो  
 मणिः तत्रादौ चिन्तयेते जीवन्हिरूपं सुशक्ति  
 कमतेजसामहताश्लिष्टमानन्दैकाग्रमन्दिर  
 म् एकाग्रमनां पश्येत् तत्र देवसुविग्रहं स्निग्ध  
 मिन्दीवरश्यामं कोटीन्दुललितदुतिमचिद्रूपं  
 पं परमोदारं वीरमद्वयवृहहमद्विभुजं मधुरं शा  
 न्तं जानकीप्रेमविह्वलामंदोर्दण्डचाण्डकोराण्ड



रामचन्द्रमहाभजंमसीतालं कृतवा माङ्गका  
 मरुपंरमोत्सुकं तरुणारुणसंकाशं विकचा  
 म्बुजपद्मकंपदपुन्वनस्वेचंदं विपन्नेज  
 समावृतं कर्मपृष्ठभासरणान्मंजीरपादकम  
 कटिसूत्राङ्कितं श्रीसंजज्ञसूत्रैरलंकृतमर  
 त्मकंकणकेयूरशोभिताग्रभजद्वयमचन्द्र  
 कोटिप्रतीकशंकुएडलाढ्यश्रुतिद्वयमप्र  
 वृत्तारुणसंकाशं किरितेन विराजितमगोवि  
 न्दंगोविन्देश्वेष्टं चिन्मयानन्दविग्रहमदिव्या  
 युधसंपन्नं दिव्याभरणभूषितमप्रक्षरं  
 केवलं ब्रह्मपीतकौशेयवाससमशंखचक्र  
 गदापद्मचर्मसिहलमशलैः तद्रूपैर्विवि  
 धाकारैः सेव्यमानं परात्यरमवशिष्टवामदे  
 वादिमुनिभिः परिसेवितमलक्ष्मणाः पश्चिमे  
 गागेधृतद्वचचचामरमउभोभरतशत्रुहोता



लकराम्बुजोऽप्रमेव्यग्रमहन्मंतं वाचयन्त  
 सुपुस्तकं भानुकोटिप्रतीकाशं चंद्रकोटिप्र  
 मोदकं इन्द्रकोटि समा मोदं वस्तुकोटि वस्तु  
 प्रदं विलुप्तमती पालं ब्रह्मकोटि विसर्जनं रुद्र  
 कोटि विमर्दं वैमातृकोटि विनाशनं भैरवको  
 टिसंहारं मृत्युकोटि विभक्षकं यमकोटि दु  
 र्गधर्षकालकोटि प्रधावकम इति सत्यदाशि  
 वसंहितायां सौमित्रिवाक्यं वेदान्धति प्ररुग  
 मभक्तजोतिनिप्रकारके हे सोनी किष्टकाय  
 हकर्म है किं ब्रह्महराघौ के प्रवर्त्तनादिक त  
 थाकथा उत्सवादिक सेतत्यर है वो भगवूथा  
 भगवद्रूपों के विषे प्रदेह करते करते तवम  
 ध्यमयस्का लक्षणों धाभक्त है उसके प्र  
 भ्यास सेतव उत्तमभक्ति जेस्का लक्षण एह  
 है कितनम यहाँ जाइराघों के प्रग जो है उसमें



रात्रि दिन मन लगार है उसकी छोड़ि कै प्रन्य  
 मन न जाइ सत्रु मित्र सीत उस निंदा स्तुति जे  
 माया कृत उपद्रो है उसका त्याग होकर देह  
 दसान रहै वो कि सी बस्तु की दृष्टान रहै तब उं  
 तम भक्ति है तत्र प्रमाण भगवत उरु विक्रमां  
 द्विशारवानर वमणि चंद्रिका निरस्तता पे हृदि  
 कथमुपसीदतां पुनः सप्रभवति चन्द्र इवो दि  
 तेऽर्कतायः एस्से परे कोर्बु नहीं है साक्षात् इ  
 श्वर मय है एस्को तुरिया वस्था कहतें हैं वो ए  
 लो गनी स्त्रै गुण हैं प्ररु की इरुद्रादिक जो पर  
 भ्यद है उसका भिभक्तों को तिरिस्कार है केव  
 ल भगवद् दाम्बुज दर्शन श्ला है प्ररु मन जो है  
 वहि मुख्य कारी है उसि को एक वकरना कवि  
 न है सो मुमोक्षु को चाहिये की मन एक वकर  
 प्ररु मन का स्वभाव चंचल है तेस्का एक वता



कठिन है परन्तु मुमोक्षु को उचित है कि मन का  
 स्वभाव भिन्न है परन्तु भक्ति में जैसे भगवद्  
 पदार्थ से सिलन्यता इत्यादि में मन लगार है  
 अन्यत्र न जाइ देखना चाहिये की मनुष्य जो  
 चैतन्य जीव है उसको सुगम पथ धरना चा  
 हिये राघो के तुल्य को न प्रेसा द्या लु है देखा  
 गणिका गीध इत्यादि महा पापियों की गति  
 दिया अन्य देव सब स्वार्थ वस है गीध पुतना  
 सेवरी नीखाद केवल सक्त सर्ग गत मात्र से  
 मुक्त होये सिद्धान्त एह है कि धर्म पुन्य ज्ञान क  
 र्म जज्ञ इत्यादि जो चाह सो करे परन्तु गति विना  
 राम भक्ति नहीं है काहे कि विना राम जज्ञादिक  
 जे तने कर्म है सब जाल है जैसे प्रकास पुष्प ए  
 कराम भक्ति मेरु स है अन्य केवल वाक्य मात्र है  
 तत्र प्रमाण न तत्पु रणो न हिय न रामो यस्या न रामो



कर्मव्यतिलकं विवरं प्रादीपि रामांश्चि विंदुसहितं सचपि  
 मदेकं ते तथा तुलसिदा मलसंभुजे वै तप्रे नवाण धनुषा  
 कितरामभक्तः रामस्य चैव हृदये शचि जमंत्रं श्रीरामना  
 मसंहितं निजनामयुक्तं सत्संगनित्यनिरताश्रुतितत्त्ववेत्ता  
 जातो महानरघुपते समुपासकस्सः इति श्रीमन्महारामाय  
 णेतत्पश्चादिस्के प्रभ्याससे प्रेमलक्षणाभक्तिज्ञानहोता है  
 तव देहकी दृशा नही रहती भगवन्मय होय जाता है प्रकृतसदस  
 दकाज्ञान नही रहता चराचरमें भगवद्रूप देखता है प्रकृत संसारसे  
 वास्तविक जव भगवद्रूप देखता है तब हर्षवै जव विच्छेद होता है  
 तब रुदन करता है तब प्रमाण खंवायुमनिसलिलं मंही च ज्योती  
 पिसत्वा निदिशो दुमाही नसरीत्समुद्रांश्च हरः शरीरं यत्किंच भूतं  
 प्राणमेहन्योः क्वचिदुदं च्युतचितं या क्वचिदुसंति नंदंति वदंत्य  
 लोकिकाः नृत्यंति गापंत्यनुशीलयंत्यं जभवंति तस्मी परमेत्यनिवृ  
 ताः इति एकादशभागवते वात्सांतराष्ट्रणुमथोगिरिराजकन्येत्वतो व  
 दामिरघुनाथजनस्य मुप्यमग्रन्यं विहाय शकलं सदसच्चकार्यं श्रीरा  
 मपंकजपदं सततं स्मरन्ति श्रीरामनामसनाग्रपठंति भक्त्या प्रेम्णा चरा  
 क्तगिरेप्यथ हृष्टलोभाः सीतायुतं रघुपतिं वाकेशोरमूर्तिं पश्यंत्यहर्निशि  
 गुरापरमेनारम्यं भूमौ जलेन भसिदेवदरासुरेषु भूतेषु देविशकलेषु चरा  
 चरेषु पश्यन्ति शुद्धमनसा खलु रामरूपं रामस्य ते भुवितले समुपासकाश्च  
 यैकल्यकोटिसततं जपहोमजोगैर्ध्यानेः समाधिं तोरत ब्रह्मज्ञानाततं  
 देवि धन्यमनुजाहृदि वाह्यशुद्धः भक्तिस्तदा भवति तस्य चरामपावो  
 इति श्रीमन्महारामायणो इति संक्षेपकै भक्तिग्यानाख्यानं समाप्तं ॥ ५॥



कठिन है परन्तु मुनोश्वको उचित है कि मनका  
 स्वभाव भिन्न है परन्तु भक्ति में जैसे भगवद्  
 पगुण सौ सिल्यता इत्यादि में मन्त्रागार है  
 अन्यत्र न जाइ देवना चाहिये की मन्त्राजो  
 चैतन्य जीव है उसको सुगम पंच धरना या  
 हिये राघो के तुल्य को न प्रैसा द्या लु है देखा  
 गाणि का गी ध इत्यादि महा पापियों को गति  
 दिया अन्य देव सब स्वार्थ वस है गी ध पुतना  
 से वरिनी खाद केवल सकत सणि गत मात्र से  
 मुक्त हो ये सिद्धान्त एह है कि धर्म पुन्य ज्ञान क  
 र्म जज्ञ इत्यादि जो चाह सो करे परन्तु गति विना  
 राम भक्ति नहीं है काहे कि विना राम जज्ञादिक  
 जे तने कर्म है सब जाल है जैसे प्रकास पुष्प ए  
 क राम भक्ति मे रस है अन्य केवल वाक्य मात्र है  
 तत्र प्रमाण न तत्पु राण न हिय न रामो यस्या न राम



चरभ्यतिलकं विवरं पृथग्दीप्तिरामांश्चिद्विंदुसहितं सचपि  
 तमद्वेकं उतथा तुलसिदामलसम्भुजे वै तप्रे नवाणधनुषं  
 कितरामभक्तः रामस्य चैव हृदये श्चिराजमंत्रं श्रीरामना  
 मसंहितं निजनामयुक्तं सत्संगनित्यनिरताश्रुतितत्त्ववेत्ता  
 जातो महानरघुपते समुपासकस्सः इति श्रीमन्महारामाय  
 णे तप्तश्चादिस्के प्रभ्याससे प्रेमलक्षणाभक्तिज्ञानहोता है  
 तव देह की दृष्टि नहीं रहती भगवन्मय होय जाता है प्ररू सदस  
 दकाज्ञान नहीं रहता चराचर में भगवद्रूप देखता है प्ररू संसार से  
 वाह्य होकर जब भगवद्रूप देखता है तब हर्षवो जब विच्छेद होता है  
 तब रूदन करता है तब प्रमाण खं वायुमति सलिलं मंही च ज्योती  
 पिसत्वा निदिशो दुमादीन सारि समुद्रांश्च हरः शरीरं यत्किंच भूतं  
 प्राणमेहन्यैः क्वचिद्दुर्दं व्युत्तचितं या क्वचिद्दुसंति नंदंति वदंत्य  
 लोकि काः नृत्यंति गापंत्यनुशीलयंत्यं जभवंति तस्मी परमेत्यनिवृ  
 ताः इति एकादशभागवते वात्सांतराष्ट्रणुमथोगिरिराजकन्ये त्वतो व  
 दामिरधुना धजनस्य मुप्यमग्रन्यं विहाय शकलं सदसच्चकार्यं श्रीरा  
 मपंकजपदं सततं स्मरन्ति श्रीरामनामसनाद्युपठंति भक्त्या प्रेम्णा च रा  
 मरगिरेष्वथ दृष्टलोमाः सीतायुतरघुपतिं च किशोरमूर्तिपस्यं त्यहर्निशि  
 बुद्धा परमेनारम्यं भूमौ जलेन भसि देवनरं सुरेषु भूतेषु देवि शकलेषु चरा  
 चरेषु पश्यन्ति शुद्धमनसा खलुरामरूपं रामस्य तमुचितले समुपासकाश्च  
 यैकल्यकोटि सततं जपहोमजोगोर्ध्वानैः समाधिभिरतोस्तब्रह्मज्ञानातर्त  
 दविधन्यमनुजाहृदिवाह्यशुद्धः भक्तिस्तदाभवति तस्य च रामपादौ  
 इति श्रीमन्महारामायणे इति संक्षेपतीभक्तिग्यानाख्यानं समाप्तं ॥ ॥



अथ चतुर्थ भागं लीख्यते स भागमे प्रनेकव  
 स्तुका सिद्धांत लिखा जा एगा प्रथम एह कि ध  
 र्मे सास्त्र में प्रनेक पापों का दंड लिखा है वो ब  
 हुत ग्रंथन में उसका प्रस्थान है सो एक त्र लिख  
 ता है यदि सास्त्रानु कूल पाप बहुत है परन्तु मु  
 ख्य पाप एह है नर्क प्रति दूस्तर दुख दाइ है को  
 ई एक दस की इ प्रठाइ स कु एड नर्क कहते हैं  
 तेन के नाम एह हैं तामिश १ अंधता मिश २ रौ  
 ख ३ महारौख ४ कुंभी ५ काल सूत्र ६ प्रसिप  
 वन ७ शरकर मुख ८ अंध कूप र्क म भोजन ९  
 अह संद १० तप्त ११ सुरभी १२ वज्र कंटक १३ शाल्म  
 लि १४ विषतग्नी १५ प्राण रोध १६ सार्पादन १७ प्रवीच  
 न १८ प्रपषाम १९ दुर्म २० रक्षगण भोजन २१ शर  
 ल प्रोत २२ दंड सुकुम २३ अवटे निरोधन २४ प  
 र्यावर्तन २५ सुचि मुख वै रणी सो जो मनुष्या



परधन परस्वत दाग हरण करता है सो कालपा  
 ससेवांध करता मिशनर्क में डारा जाता है प्रौ  
 र जो ठगी करता है सो अंधता मिशनर्क में जा  
 ता है प्रौर अंधाक्ष होकर लोह दण्ड से मारा जा  
 ता है वो उल्टा एक कल्प तक फलट करता रहता है  
 जो मनुष्य अहंकार से इश्वर को नाही मानते  
 सो रौखनर्क तप्तकुण्ड में जमदूत नित्य जला  
 ते हैं वो जो जीव हिंसक हैं सेकुंभी नर्क में प्राप्ति  
 होते हैं प्रौर जैन जीवन को मारते हैं वो इलोह  
 कर्म होकर त्वचा में घुसकरनेत्रादि मार्ग से नि  
 कलते हैं प्रौर जो शरीर पोषण करते हैं सो रौख  
 नर्क में पीवमूत्रादि विष्टारवाने पाते हैं जो मा  
 न्स भोजन करते हैं सो महारौखनर्क में डाले  
 जाते हैं वो रुरुनामी कर्म उनको भक्षण करि  
 के उगिल के पुनः पुनः भक्षण करते हैं प्ररु माता



पितागुरुद्वीहीप्रथवा निन्दक कालसूत्रनकी  
 मेताम्रमयभूमिपर अंगारमें लोटाए जाते हैं  
 अरु जो उदरनिमित्तक पाखंड करते हैं सो प्र  
 सिपन्नवननर्क में ता जन से मारे जाते हैं अरु  
 राजा होकर प्रधी को प्रदाड अरु अनध्व को  
 दाड अरु प्रधी सो द्व्य लेने से शकर मुखनर्क  
 में जाकर शकर मुख होकर अनेक शकरो से  
 मारे जाते हैं अरु जो नखटकी राम सक इत्या  
 दि जीवों को मारते हैं सो अंधकृपनर्क में डार  
 कर ओही की डे ओं न हिंसको को स्ववज्र दृष्ट  
 से चोथते हैं अरु जो चौरकर्म करते हैं सो सदं  
 सनर्क में जाइकर ओं न का हाथ काट करत  
 पगोत्तन से देह जाते हैं अरु जो परदारा प्रथ  
 वा वैश्या रत होते हैं सो तप्तनर्क में लोहमय स्त्री  
 तप्त कर कै जम दूत पुरुष में वोई सी तरह पुरुष



इस्त्री में छपटा कर दाड़ा हँकरते हैं कल्प भ  
 रित क प्ररु जो इश्वर को छोड़ प्रन्य देवो पाश  
 नावानवीन मता रूठ होता है सो साल्मलीन  
 र्क में एक कल्प तक खरूप रहते हैं प्ररु जो भ  
 गवद्दे दशास्त्रादि निन्दक है सो वैरागी में प्राप्ति  
 होते है प्ररु जिब्दा काट लिङ् जाती है प्ररु ब्रा  
 ह्मण क्षत्री प्रजास्वान गर्दभ जो पालते है सो  
 वैरागी नर्क में मलमूत्र भोजन पाकर स्वानख  
 र जो नि में प्राप्ति होते है प्ररु जो प्रहेर खिलते है  
 प्रथवा सीक्षा देते हैं वा प्रसंसा करते हैं सो वैसा  
 मन नर्क में लटका डू करि जमदूत सहश्रव  
 र्ष पर्जन्य वाएन से मारते हैं जो ग्राम जलाते  
 हैं प्रथवा घूस वा किसी तरह से व्यर्थ परद्रव्य  
 लेते हैं सो नर्क सार में जाते हैं वो सप्त सत कु  
 तालो ह द्रष्ट सहश्रवर्ष तक चौंथते हैं प्ररु जो



भूठी गवाही प्रथवा भूठी पत्र वनाते हैं सो प्र  
 ची ची नर्क में २८ जो जन उतंग पर्वत से सहस्र  
 वर्ष तक फिर फिर गिराए जाते हैं प्ररु जो मद  
 पान करते हैं प्रथवा बेचते हैं सो लोह पान नर्क  
 में लोह पुनि पुनि शहस्र वर्ष तक प्रिप्राए जाते  
 हैं प्ररु पापी मनुष्यों की प्रशंसा वा संग करते हैं  
 प्रथवा प्रभिमान वस भक्तों का आदर नहीं क  
 रते सो बज्र में जाते हैं वो उनका त्व-चानि का  
 ल लवण भर देते हैं प्ररु जो भवानी भैरवादि को  
 बलि देते हैं सो राक्षस भोजन नर्क में जाकर जे  
 न को बलि देते हैं वो इ जीव प्रान को भक्षण क  
 रते हैं प्ररु जो रिणि नहीं देते वा असत्य चुगली  
 वा क्रूर स्वभाव करते हैं सो प्रसि पत्र वन नर्क में  
 सहस्र वर्ष तक रहते हैं प्ररु जो ब्रह्म वृत्ति हरण  
 प्रथवा ब्रह्म दोह करते हैं सो साठि शहस्र वर्ष तक



क क्लम बुं ड न र्क में रहते हैं प्ररु जो म नुष्य हो  
 भगव भक्ति प्रथवा स्ववर्णी शम धर्म नहीं क  
 रते सो सूची मुख न र्क में दश सहस्र वर्ष तक रह  
 ते है इत्यादि श्रीम भद्गावत पंचमस्कंद तथा  
 जाज्ञवल्क्य संहिता में प्रायश्चित्त लिखा है सो  
 इहा मुख्य पा पों का दण्ड लिख दिया गया प्ररु जो  
 अन्य प्रायश्चित्त है उनका प्रारब्धान पूर्वोक्त ग्रंथों  
 में लिखा है इति प्रायश्चित्त दण्डारव्या मं समाप्त ॥  
 प्रथवाणी शमाख्या नं लिख्यते वेदशास्त्रों में चा  
 रि प्राश्नम तथा चारिवर्ण लिखे है मनुष्यों को स्व  
 वर्णी शम धर्म पर प्रारूढ होना ईश्वर ज्ञा है प्रन्य  
 त करने से हानि होती है तत्र प्रमाण श्रीम भद्गाव  
 त्रीतायां स्वधर्मो निधन श्रेयः पर धर्मो भयावह  
 सो चारिवर्ण है ब्रह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र संक्षेप ध  
 र्म कह जाते हैं प्रथम ब्रह्मण को चाहिए की प्रष्ट



वर्ष के अवस्थामें वैदिक यज्ञोपवीत करै और  
 सुचिर है वौत्रिकाल संध्या वैदिक करै वौनित्य  
 हवन वौशीरामचन्द्रार्चन वौज्ञान वैराज्ञतप  
 वेद पठना वौपठाना दानपतिग्रहयज्ञकरना  
 कराना उचित परस्त्रीहिंसा असत्य भाषण अ  
 न्यदेवार्चन अशुचि इत्यादित्याग उचित है  
 तत्र प्रमाणानि शमोदमस्तपः शौचं क्षांतिरार्ज  
 वमेव च ज्ञानं विज्ञानमास्तिक्यं ब्रह्मकर्मस्वभा  
 वजं इति श्रीमन्भगवद्गीतायां शमोदमस्तपः  
 शौचं संतोषः क्षांतिरार्जवं मभदक्तिश्च दया सत्यं  
 ब्रह्मप्रकृतयस्त्विमा इति एकादशे भगवद्वाक्यं  
 प्रवैश्वत्वं विप्राणामहमापातकसंमितं प्रवै  
 क्ष्मवस्तु यो विप्रः सर्वकर्मेषु गर्हितः चतुर्वेदी  
 च यो विप्रो वा सुदेवं न विंदति वेदभारसमाक्रां  
 ता सर्वे ब्राह्मणा गार्धवः न विपुंश्चिद्विजो धार्थ्यन



पद्याकार में वचन चान्य देवता भक्ति रापध  
 पिकदा चन इति वशिष्ट स्मृतौ ब्राह्मणानां स  
 धर्मश्च त्रिसंध्यं भजनं हरेः तत्पादोदकनै  
 वेद्यं भक्षणं च सुधाधिकं संध्याहीनौ ५ श्रु  
 चिर्नित्यमनर्हः सर्वकर्मषु यदन्हा कुरुते क  
 र्मनतस्य फलभाग भवेत इति ब्रह्मवैवर्ते ह  
 रीति से प्रनेक ग्रन्थो में लिखा है परन्तु ब्राह्मण  
 को केवल श्रीराम चन्द्र उपाशना करना चा  
 हि ए पूर्वाक्त ममाणों से प्रथा तो सात्र धर्मानि  
 क्षत्री ब्राह्मणो का एक ही धर्म है क्षत्रियों को  
 दान लेना वेद पढाना जज्ञ कराना त्याग है ग्रा  
 गे श्लोक लिखे जाते है शौर्य ते जो धृति दी  
 क्षां युद्धे चाप्यपलायन मदानमीश्वर भाव  
 श्च क्षात्रं कर्म स्वभाव जम इति भगवद्गी  
 तायां ते जीवलं धृतिः शौर्यं तिति क्षौद्रायमु



द्यमः स्थैर्यं ब्रह्माण्यतैश्वर्यं क्षत्रप्रकृतयस्त्वि  
 माः प्रहिंसा सत्यमस्तेयमकामक्रोधलोभ  
 ताभूतस्त्रियहितेहाचधर्मीयं सार्ववर्णिकः  
 इति श्रीमद्भागवते एकादशे प्रौढस्त्री को  
 हिंसा प्रशौर्यतामाद्यपानप्रसत्यभाषणइ  
 त्यादित्यागहै प्ररुगमचन्द्रार्चणतत्त्वोति हे  
 तुदानयज्ञब्राह्मणसुश्रूषणइत्यादि उचित  
 है प्रथातो वैश्यधर्मीणि वैश्यकोकषीकर्म  
 गोरक्षणावाणिज्यप्रहिंसा ब्राह्मणसेवा पु  
 गणादिश्रवण उचित प्ररुवेदपाठजज्ञब्रह्म  
 क्षात्रकर्मत्यादित्यागहै कृषिगोरक्ष्यवाणि  
 ज्यं वैश्यकर्मश्रमभावजम इति श्रीमद्भागव  
 तीतायां आस्तिक्यं दाननिष्ठाचग्रंदभो ब्रह्म  
 सेवनं प्रतुष्टिरर्थोपि चर्यै वैश्यो प्रकृतयस्त्वि  
 माः इति भागवत एकादशे प्रथातो शुद्धधर्मीणि



अशुचिप्रभृतकामक्रोधपरिचर्याइत्यादि  
 शूद्रधर्महैपरिचर्यात्मकंकर्मशूद्रस्यापिस्व  
 नावजंइतिप्रीभगवद्गीतायांअशौचमन्तं  
 स्तेयंनास्तिक्यंशुष्कविग्रहःकामक्रोधस्वतर्ष  
 श्चस्वभावोऽतेऽवसापिनांइतिएकादशभग  
 वतेइतिवर्णधर्माणि \* अथातोआश्रमधर्मा  
 णिवेदशास्त्रोमेचारिआश्रमहैब्राह्मचर्यगृह  
 स्तवाणप्रस्थसन्यस्तसोप्रथमाश्रमब्राह्मचर्य  
 हैब्रह्मचर्यमेंपहिलेउपनयनमेंजब्रह्मचर्या  
 श्रमकाइरादाहोयतौग्राचार्यकेइहांजाइक  
 र्षडंगवेदइत्यादिद्वादशवर्षतकपठेंऔरशुचि  
 ऊर्द्धरेतारहैतिसंध्यापासनकरैअहिंसकस्त्री  
 संगत्यागइत्यादिधर्मवेदोक्तउचितहैतत्र  
 श्लोकानिद्वितीयंप्राप्यानुपूर्वाज्जन्मोयन  
 मनंद्विजःवसनगृहकुलेरांतोब्रह्माऽधीयात



चाहुतः मेखलजिनंदंडाक्षप्रह्मसूत्रकमं  
 डलनजटिलोऽधौतवृद्धासोऽरक्तपीतः  
 कुशानदधतस्नानभोजनहोमेषुजपोच्चार  
 चवाम्यतः नहि द्योन्नखरोमणिकक्षोपस्य  
 गतान्यपिरेतो नात्रकिरेज्जातुब्रह्मव्रतधरः  
 श्वयंप्रवकीर्णोऽवगाह्याश्रयतास्तुविपदी  
 जपेत्प्रग्न्यर्क्काचार्यागोविप्रगुरुवृद्धसुगं  
 श्रुचिः समाहितउपासीतसंध्येचयतवा  
 ग्जयनप्राचार्यमां विजानीयान्नाऽवमन्ये  
 तर्हिचितनेमर्त्यबुक्त्वाऽसूयेतसर्वदेव  
 मयोगुरुः शुश्रूषमाणप्राचार्यसदोयासीत  
 नीचवतयानशय्यासनस्थानैतीतिदूरकृतं  
 जलिः एवंवृत्तोगुरुकुलेवसेभ्दोगविवर्जितं  
 प्रान्नौगुणवात्मनिचसर्वभुतेषुमां परंप्रपुष्ट  
 मधीरुपासीतब्रह्मवर्चस्यऽकल्मषः स्त्रीस



निरीक्षणस्य शसंलापश्चेलनादिकं प्राणि  
 नोमिथुनीभूतानगृहस्थोग्रतस्त्यजेतइति  
 श्रीमद्देवादशभागवतेदूसरीतीसेप्रन्यत  
 धर्मप्रौरभीहैसोब्रह्मचर्यविधिग्रन्थान्त  
 रोसेदेखनाचाहिएमुख्यइहहैइतिसूक्ष्मतो  
 ब्रह्मचार्याख्यानंप्रथातो गृहस्थाश्रमाख्या  
 ना गृहस्थाश्रममेंविवाहशुचिकरकैस्वव  
 र्णधर्मानुसारचलैप्ररूब्राह्मणसाधुकातो  
 षणकरैप्ररूभगवदर्चनप्रगस्त्यसंहितोक्त  
 करनाउचितहैक्योंकेभगवद्वाक्यप्रगस्तेनो  
 क्तमार्गेणपूजयेन्मांसमाहितःइत्यादिश्लोका  
 निगृहार्थीसदृशीभार्यामुदहैदयुगुष्णितांय  
 वीयंसीतुवयसायांसर्वणीमनुक्रमातइज्जा  
 ध्ययनदानानिसर्वेषांचद्विजन्मनांप्रतिग्र  
 होध्यायनंचब्राह्मणस्यवयाजनंप्रतिग्रहं



मन्यमानस्तयस्तीजोयशोनुदं प्रन्याभ्यामेव  
 जीवेतशिलैवीरोषदृक्तयोः बाह्मणस्य हि देहो  
 यं शुद्धं कामायने अते कच्छायत पसेचे ह प्रेत्या  
 नंत सुखाय च शिलो दृष्ट्या परितुष्टं चितो  
 धर्ममहांतं विरजं पुषाणः मय्यर्पितात्मा गृह  
 एव तिष्ठन्नाऽतिप्रसक्तः समुपैति शांतिवेदा  
 ध्यापस्व घास्वाहावत्यन्नाद्यौ र्पथोदयं देव  
 र्षिपितृभूतानि मद्रूपाण्यन्वहं यजेत पटच्छ  
 योपपन्नेन शुक्लेनोपार्जितेन बाधनेनापीड  
 यन्नृत्या न्यायेनैवाहरे कतूनकुटुंबेषु न स  
 ज्जेत न प्रमाद्येत्कुटुंब्यपि विपश्चिन्नश्वेरप  
 श्येददृष्टमपि दृष्टवत् एवं गृहाशयासि प्रहृद  
 यो मूढधीरपं प्रतृप्तस्ताननुध्यायन्नृतीं चं  
 विशतेतमः इत्यादि पूर्वोक्तप्रमाणो गृहस्ता  
 श्रममै नित्यं कृत्वा भगवत्युज्जन नित्यं हवन



नित्यदानब्राह्मण भगवद्भक्ता हितोषणक  
 रणाविषयसे प्रसक्त हिंसापरस्त्री प्रसत्यइत्या  
 दित्याग लिखा है और पूजन भगवत्स्य संहितो  
 क्त लिखा जाता है प्ररूप प्रतिमा आठ प्रकार की  
 होती है शैली दारुमयी लौही लै व्यालेख्या च  
 सैतकी मनोमयी मृण्मयी प्रतिभाष्ट विधा  
 स्मृता ॥ शिलाकी १ काष्ठे लोहेकी ३ चन्दन ४  
 चिन्न पुस्तक ५ एक सुवर्ण ६ मनोमय ७ मृ  
 त्तिका ८ अगस्तिरूपा च पूजा विधानं वक्ष्या  
 मिनारदाभिमुखं च यत्वा लम्बी कायमुनीन्द्र  
 यद्वारपूजादिकं तथा वेदंगणपतिं भानुं तिल  
 कं श्यामिनं शिवं क्षेत्रपालं तथा चाची विधात  
 रमनंतरं भृशहाधीशं गृहं गंगायमुनाकुलदे  
 वता प्रचंडचंडी च तथा शैख्यद्वानिधी अपि  
 वास्तोष्यति द्वारं लक्ष्मीं गुरुं वागाधिदेवता एता



संपूज्य भास्व्याहं श्रीराम द्वारदेवता महा मंड  
 ककालाग्निसद्भाभ्यां प्राणामाभ्यां हं प्राधारश  
 क्ति कूर्मा भो नागाधिपते ये तथा पृथिव्यै च त  
 था क्षीरसागराय नमो नमः श्वेतद्वीपाय रत्नाद्वे  
 कल्पदृशाय ते नमः सुवर्णमंडपायाथ पुष्प  
 काय महाहर्ते विमानाया एरत्नापसम्यक सि  
 हासनाय च उद्यरादित्य संशोभिपद्माय तद्वन  
 तरं नमो मिधर्मज्ञानाभ्यां वैराज्ञाय नितः क्रमा  
 त ऐश्वर्याय नमो धर्माः ज्ञानाभ्यां पूर्वतस्था  
 वैराज्ञाय च तथानैश्वर्याय नमो नमः संप्रर्के म  
 डलायाह सुपय्यु पर्वरिसर्वदा संत्वाय च से नि  
 त्यंतमसेपिनमो नमः चंचंद्रमण्डलायेति ध्या  
 त्वा ध्यात्वानमाम्यहं रमग्रिमंडलाय तिसं प  
 ज्यैव प्रयत्ननः विमंलोर्त्कर्षणी ज्ञानाक्रियायो  
 गाभ्य इत्यं पि नमामि प्रही सत्याभ्यामीशानाये



दलान्तरे पूर्वादितो नुग्रहापै प्रणामा मितं दन्तर  
 मूनमो भगवते तदिह सर्वे तदनन्तरं सर्वं भूताय  
 त्मने चेति वासुदेवा य इत्यपि अग्रे हनू मानसु ग्री  
 वो भरतश्च विभीषणः लक्ष्मणो प्यंगदश्चैव शत्रु  
 द्धो जाम्बवांस्तथा दृष्टि र्यपन्ती विजयो सुराष्ट्रे  
 राष्ट्रवर्द्धनः प्रकीर्णो धर्मपालश्च सुमन्तश्चाष्ट  
 मन्त्रिणः एतेभ्यो रामरूपेभ्यो युष्मभ्यं प्रणामा  
 म्यं हं इन्द्राग्रियमदेवेभ्यः सायुधेभ्यो नमो न  
 मः नमो निजतये तुभ्यं वरुणा य नमो नमः ना  
 यवे धनदायाथरुभ्यां येशायते नमः ब्रह्मणे  
 नन्तरूपाय दिक्पालायात्मने नमः तदा युधा  
 यवज्जाय शक्तये दण्डकाय च नमः स्वङ्गाय  
 पाशाय ध्वजाय च गदाय च विश्रलायास्वजा  
 पाथ चक्राय सततं नमः वशिष्ठो वामदेवश्च ज  
 वालिर्गोतमस्तथा भरद्वाजः कौशिकश्च वाल्मीकि



नरिदस्तथानलं नीलं च गवयं गवाक्षं गंधना  
 मादतं सुरमिं चापि मैदं च द्विविदं च यजेत्क्रमां  
 त्शंख्यचक्रगदापद्मशार्ङ्गवाणात्मने नमः  
 त्मते नमस्तुभ्यं विष्वक्सेनादिकाश्च ये सर्वे श्व  
 र्यस्वरूपा यज्योतिषे संततं नमः इति ग्रावर्ण  
 पूजा षोडोपचारैर्वापंचोपचारैर्यथा शक्तिः देवा  
 ने पूजयित्वा श्रीरामपूजां समा रभेत तन्मंदिरा  
 ध्वं ध्यायेत्सूर्यकोटि संमप्रे मंडूदीवरनिभं रा  
 तं विशालाक्षं सुवक्षे सं उद्यादित्यमभ्दात्यकु  
 ण्डलाभ्यां विराजितमसुना सं सुकिरीटं च सुक  
 पो लं सुचिस्मितविज्ञानमुद्रादिभुजं कवुग्रीवं  
 सुकुन्तलं नाना रत्नमयैर्दिव्यैर्हीरेभ्रपितमव्य  
 यमविद्युत्पुंजप्रतीकाशं वस्त्रयुग्मधरहरिंबी  
 रासनस्थं संतानतरुमूलनिवासिनमहासुग  
 धलिप्रांगं वनमाला विराजितम्वामपार्श्वस्थि



तांसीतां चामीकरसमप्रभां लीलापद्मधरां दे-  
 वीचारुहासां शुभाननां पश्यंती स्निग्धया ह-  
 ष्याकल्पाविराजितां हृत्त्रचामरहस्तेन त-  
 स्मरणेन सुसेवितं हनुमत्प्रमुखैर्नित्यं वानरैः  
 परिसेवितमस्तूयमानं ऋषिगणैः सेवितं भक्ता-  
 दिभिः सनंदनाभिश्चान्यैर्योगिद्वंदः स्तुतं सदा  
 सर्वेशास्त्वार्थतत्त्वज्ञयोगज्ञयोगसिद्धिदमस्त-  
 ॐ नमनसारा मं पूजयेत्स तं हृदि इति ध्यानां  
 प्रावाह्यामि विश्वेशं जानकीवल्लभं विष्णुं  
 कोटाल्यातनयं विष्णुं श्रीरामं प्रकृतेः परां इत्या-  
 वाहनं ॥ राजाधिराजराजेन्द्ररामचंद्रमहीपते  
 रत्नसिंहासनं तुभ्यं दास्यामि स्वीकुरु प्रभो ॥ इ-  
 त्यासनं ॥ त्रैलोक्यपावनानंदनमस्ते रघुनाय-  
 कपाद्यं गृहाण राजर्षे रामो राजीवलोचनः ॥ इ-  
 त्यर्घ्वं ॥ परिपूर्णपरानन्दनमो रामाय वैधसे गृ



हाणां धर्ममया दत्तं कृत्स्नविद्मो जनार्दन ॥ इति प्र  
 र्वं ॥ अं नमो वासुदेवाय तत्त्वज्ञानस्वरूपिणो मधु  
 र्वर्कगृहणो मंशजरा जायते नमः इति मधुपर्कः ॥  
 नमः सत्याय शुद्धाय बुद्धाय ज्ञानरूपिणो गृहाणा  
 च मननाद्य सर्वलोकैकनायकः इत्यस्मिन् ब्रह्मा  
 डोरमध्यस्थतीर्थेश्वरघुनन्दनहृत्पायिष्याम्य  
 हं भक्त्या संगृह्णाण जनार्दन ॥ इत्यह्नानां संत  
 प्रकांचनप्रख्यपीताम्बरमिदं हरे संगृहाणा ज  
 गन्नाथरामचन्द्रनमोस्तुते ॥ वस्त्रं ॥ श्रीरामाच्यु  
 तयज्ञेश श्रीधरानन्तराघवब्रह्मसूत्रं सोतरी  
 यं गृहाणारघुनायक इति यज्ञोपवीतं ॥ किरी  
 टहारकेयूररत्नकुण्डलमेखलाग्रैवैयकीस्तु  
 भीहारत्नकंकणानूपुरैरबमादीनि सर्वाणि  
 भूषणानि नृपो तमग्रं हं दास्यामि समुद्रतया सं  
 गृहाण जनार्दना ॥ भूषणं ॥ कुंकुमागरुकस्तूरी



कर्पूरोन्मिश्रचंदनंतुभ्यंदास्यानिविश्वेश  
 श्रीरामश्रीकुरुप्रभो॥चंदनं॥तुलशीकुंदमं  
 दारजातिपुन्नागचंपकैःकदंबकरवीरैश्चकु  
 सुमैःशतपत्रकैःनीलाम्बुजैर्विल्वदलैःपु  
 ष्यमाल्यैश्चराघवपूजापिष्याम्यहंभक्त्यासं  
 गृहणजनार्दन॥पुष्पंमृथांगपूजाश्रीरामम  
 दायनमःपादौपूजयामिराजीवेलोचनाय  
 गुल्फोरावणान्तकापजानुनीविश्वामित्रि  
 यायनाभिंपरमात्मनेनमःहृदयमश्रीकण्ठ  
 यनमःकंठसर्वस्वधारिणोवाहरघृद्धहाय  
 मुखंवाचस्यतंःपेठरुविश्वरूपायजंघनेनस  
 गाग्रजायकंठिविश्वमूर्तयेमैंद्रपद्मनाभाय  
 जिह्वाहामोदरायदन्तानंसीतापतेयलला  
 टंज्ञानगम्यायसिःसर्वात्मानेसर्वांगइत्यंग  
 मूजाताम्बुलंगृह्यतांरामकर्पूरादिसमन्वितं॥



ताम्बूलं ॥ नृत्यगीतादिवाद्यनिपुणपठनादि  
 मिः राजोपचारैरखिलैः संतुष्टीभवराष्ट्रवधसं  
 तुष्टीकरणं ॥ नमस्तेजानकीनाथरामचंद्रमही  
 पते पूर्णानन्दैकरूपत्वं गृहाणार्धं नमोस्तुते ॥  
 प्रर्व ॥ मंगेलार्थं महीपालनीराजनमिदं हरे स  
 गृहाण जगन्नाथरामचंद्र नमोस्तुते ॥ नैरांज  
 नं ॥ मनोवाक्कायजनितं कर्म यद्वाप्नुभाप्नुमं  
 तत्सर्वं प्रीतये भूयान्नमो रामाय शार्ङ्गिणे  
 प्रपद्ये सहस्राणि कीयंते हर्निशं मया दा  
 सोयमिति मां मत्वा क्षमस्वरत्ननाथक ॥  
 इति पुष्पांजलिर्जानिकानिचपायानि  
 ज्ञाताज्ञातकृतानि च । तानि तानि विनश्यं  
 ति प्रदक्षिणार्थं देवदे ॥ प्रदक्षिणं ॥ दुर्गमे  
 विषमे चोरे शत्रुभिः परिपीडिते निस्तारय  
 प्व सर्वपातधादृष्टं च मे भवेत् ॥ नमस्कारं



॥ एवं यः कुरुते पूजावहिर्वाहद्वये पि वा सक्तत्पू  
जनमात्रेण एव भवेन्नरः एव संपूज्य ब्रह्म सु  
त्तरामोपनिषदा मः स्तवराजादीन् स्तोत्रेण यथा  
शक्तिस्तुत्वानि त्यहवनसमारभेत अथातो नित्य  
हवन् विधिः ॥ विधिबहिहिते कुण्डे स्थण्डिले च  
तुरग्नके प्रावाहनीयं गार्ह्यं बालौकिकं वाग्निमु  
ज्ज्वलं प्राणीयाश्चेन्नैकत्वेन कृत्वा दांसं परित्य  
ज्य तद्देभाश्च मलं त्रेण स्थापयेत् पुरतः सुधीः प्र  
न्याधाताभिधं कर्म नित्यहोमेन विद्यते वीक्ष  
णं मूलमंत्रेण शरेण प्रोक्षाणं मतं तेनैव ताडनं द  
र्भैर्वमणाभ्यक्षाणं स्तुतं अन्वाधावाद्यैर्यद्व्य  
रिस्तीर्य पथा विधिः प्राणानायम्य लक्ष्मीशं सा  
गं सापुधमव्ययं सिठान्नद्रव्यतोपहस्य इति सं  
कल्प्य वाग्यतः न्यासं कृत्वा प्रणीतां बुंक्ष्य रावाधा  
पतज्जलैः यज्ञसाधनसंभारं प्रोक्षयेन्मूलमं



ततः पवित्रोत्पन्नानां तंतु कुर्यात्कर्म स्वगृहातः  
 सरुआर्चिषे हृदयाय च नमः स्वस्ति पूणाय शि  
 रसे स्वाहा उतिष्ठ पुरुषाय शिरवायै वषट् धूम  
 व्यापिने कवचाय हुंस प्रजिह्वाय नेत्रत्रयाय यौ  
 षट् धनुर्धराय अस्त्राय फटं उं रं फटं उं वै स्वा  
 नरजात वेद इहावरुलोहिताक्ष सर्वकर्माणि  
 साधय स्वाहा एवमावाह्य समिधि सिद्धाग्निं  
 दीपयेधि भुंक्तं चित्तिंग सह न ह न हुत वह पच प  
 च सर्वज्ञाज्ञापय स्वाहा अग्नि प्रज्वलितं ब्रह्म  
 जात वेद समूर्जितं हिरण्यवर्णं मनलं समिधं  
 सर्वतो मुखं नतः षोडशे चारं प्राणचमुचार्य  
 सकलपाप्मात्कारकवन्हे गर्भाधानादिकाः क्रि  
 याः सपद्यता स्वाहा समिधं धौ समौक्तत्वात्  
 रौ प्रविततांगुली मध्यमे मिलिते कृत्वा तन्मधे  
 गुह्यकौ क्षिपेत्सुद्रेयं स प्रजिह्वाख्यादर्शयेज्जा



तवेध सेहिरण्यगगनारक्तकह्मापीताप्रभासि  
तासर्वसिद्धप्रभापुण्याजिह्वासप्तविभाव  
सोः पीठेतासूनयातेप्रागंगेरहमूर्तिभिः स्त  
दनुभूयश्च शतमखाद्यैः विधिनाथ हिरण्य  
रितसंप्रयजेनजातवेदाः सप्त जिह्वा रुयवा  
हनमेवचग्रश्चोदजं सेतुश्च सवैश्वानरए  
वचकोमारतेजाश्चतष्टा विश्वदेवमुखानुपौ  
स्पुरहमूर्तयेदिक्षुग्रन्थेपदपूर्विका मध्ये  
गताजाशनमे ध्यं पूजा मंडलताः प्रमुग्धावाह  
येद्रामचंद्रपरिवारसमन्वितं मंत्रेन्या संविधाया  
स्मिप्रागवन्मद्वाप्रदर्शयेतगंधपुष्पैः धूपदीपै  
साग्निं संपूजयेत्यभुग्धावाहये द्वा मेचंद्र परि  
वारसमन्वितद्रवद्रव्यंतेवाभावेजुहुयान्मृग  
मुद्गपानागवल्लिदलंपूजातुलशीगर्भयाथवा  
प्राद्याज्याभागायावोरौ कुर्यादाज्या पुतं हविः



कवचेनाम्बुमुद्योतदस्त्रेणपरिरक्षयेन्संयोज्य  
 मूलमेवेणामिमञ्च जुहुयाद्दुधः इत्यग्निसुरवं  
 शसक्तिवाजंवे प्राञ्जप्तास्वाहावदेततः मंत्रांत  
 आहुतिक्षेपस्त्यागः सर्वाहुतिष्वपि षोऽशाहु क्रिदेवं  
 यजेद्वाहैश शक्तिकंद्वारपीठगदेवेभ्यः एकै क  
 प्राहुतितंतः गणेशादि द्वाविशभ्वति द्वारदेवताभ्य  
 दृचत्वारिंशत्पीठदेवाश्च मंदुकादयः अष्टाशानशतं  
 देवाभवंतिहृदयादयः सवेष्टनवत्यधिकंशतंदे  
 वाप्रकीर्तिताः गणेशायसवित्रेयत्रेचमहेशायद्भि  
 योतथाचतुर्णामाहुतिंस्त्वाततोब्रह्मार्पणाहुतिः  
 इतः पूर्वप्राणबुद्धिदेहधर्माधिकारतः जाग्रत्स्व  
 प्रसुप्तपुष्टावस्थापुमनसावाचकर्मणाहस्ताभ्यां  
 मुदरेशिष्याचयत्कृतं यस्मृतं तत्सर्वब्रह्मार्पण  
 भवतुॐ भूवः स्वः स्वाहा इन्द्राणां नमः भूम  
 लमुच्चार्यसंगायसायुधायसवाहनायसम्पराण



यशसक्ति काय श्री सीतापतये स्वाहा श्रीरामा  
 यद्दंनम इति पूर्णाहुतिं दत्वा परिसमूहनं  
 प्रयुषं जमदग्नेति मंत्रेण भस्मधारयेत् पूर्णपत्रं  
 पूर्य तोयैः सप्तकृत्यो मिमंत्रितैः प्रत्मानमभिषिचे  
 त्केशदर्वैः तुलशीदलैः चिकीर्षपुष्पां जलिशुद्ध  
 भावः कार्यं प्रणामं हुतमुक्त्वा यउद्वास्यवन्हे  
 स्तिदशाधिपेशं वलिहरे भ्दैरवयोगिनीभ्यः नित्य  
 होमे मन्त्रयेवमाहुतीनां शतद्वयं मविशत्यधिकं  
 संगानां स्थानां चाहुतित्रयं जयस्याथ दशांसे  
 नहुने दाज्यपूतं हविः तद्दशांसेन मूलेन गंधप्र  
 ष्ठापुतेर्यैः सांगं रामं तर्पयामित्येवं तर्पयेत्प्र  
 तुलद्दशांसेन ततोयैः सप्तकृत्यो मिमंत्रितैः प्रत्मा  
 नभिषिचेत्केशदर्वैः स्तुलशीदलैः इति नित्य हो  
 मः पूर्वोक्तविधिसेष्टहमे धीधर्मो को प्रचंचाहव न  
 श्रीरामचन्द्रप्रसन्नार्थदानयथाशक्ति नान्यद्गमस्व



वरीकृत्तकरना ३ चित है प्ररुष्ट हस्था शनमे  
 सीकेवलं श्रीरामचन्द्रार्चन इत्यादि विहित  
 है इति संक्षेप तो गृहस्थाश्रम धर्माख्यान सम्पू  
 र्ण ॥ ४ ॥ अथातो वाणप्रस्थ धर्म व्याख्यमिवा  
 ण प्रस्थ तीसरा अश्रम है इसमें चाहिये कि भा  
 र्यीको पुत्रको सौपि अथवा संयुक्त वनमे जाइक  
 र कंदमूलादि भोजन करै वल्कलाम्बर विण  
 शाइ ग्रीष्ममे पञ्चाग्नि शरदमे जल शयनी इ  
 त्यादि धर्म है प्ररु श्रीरामचन्द्र यजन करै सो श्लो  
 क लिखे जाते हैं वनं विविक्तः पुत्रेषु भार्या न्यस्य  
 स है व वा वन एव वसेच्छातस्मृतीयं मागमायु  
 षः कंदमूलफलैर्धन्यैर्मध्ये र्दति प्रकल्पयेत व  
 सीत वल्कलं वासस्तृण पर्णाजिनानि च के  
 शो मनखक्ष्म शुभलानि भृया हृतः न चावेद  
 षु मज्जेत त्रिकालं स्थंडिले शयः ग्रीष्मे तप्येत प



च्छगनीन्वर्षास्वासारपादुसेऽप्राकं टमग्नः शि  
 रःपवंहृतस्तपश्चरेतः प्रप्तिपक्वसमञ्जीयात्का  
 लपक्वमयापिवाउल्लखलोष्टमकुट्टोवांदंतो  
 ल्लखलएववास्वयं संविनुयात्सर्वमात्मनो ह  
 तिकारणं देहकालवलाभिन्नो नादहीतान्य  
 दाहृतं वने श्यरूपरोडाशैर्निर्वपेत्कालचोदि  
 ताननतु श्रौतेन पशुना मां यजेत वनाश्रमी  
 अग्निहोत्रचर्देशश्च पूणमासश्च पूर्ववत् चतुर्मा  
 स्यानि च तुनेरान्नातानि च नैगमैः एवं चीर्णेनै  
 तपसा मुनिर्धर्मनिर्गततः मातपो मयभारध्व  
 ऋषिलोकदुर्यैति मां इति श्रीमद्भागवते एका  
 दशस्कंधे भागवद्वाक्यं इति संक्षेपतो वाण प्र  
 स्थाश्वमधर्मसः अधातो सन्यस्तधर्मरव्यानां  
 सन्यस्ताश्च मत्ता वैरातो दयको कहेते हैं सन्यस्ता  
 मे मुनिवस्त्वको पीनदण्डकमण्डलधारकानां



जीवावलोकनकरचलना जलपजलपीना  
 सत्यवाक्यामनप्रउदुं मिशास्वधर्मीक्तकरना  
 निस्सोगरहनासर्वभूतस्थितरामचन्द्रकोमानना  
 इंद्रीमननिग्रहकामक्रोधमदलोभादित्यागशा  
 नुमित्रशीतोष्णसुखदः खसमजानानाउचित  
 हैप्रमाणं॥ विम्यायेन्मुनिर्वासः कोपिनाच्छा  
 दनंपरंत्यक्तं नदण्डपत्राभ्यामन्यकिंचिदनाप  
 दिदृष्टिपूतं न्यसेत्पादंवस्त्रपूतं पिवेज्जलंसत्य  
 पूतं वदेद्वाचं मनः पूतं समाचरेत्तमौनानीहानि  
 नायाभादण्डावग्रेहचेतसामहोतेपस्ये संत्यं  
 उगवैणमिर्नमवेद्यतिः निष्कांचतुर्षवर्णेषु वि  
 गह्नीन्वर्ययं श्रूते सप्तागारनसंक्लृप्तास्तुष्य  
 लब्धेन तावतावहिर्वत्नाशयं मत्वा तत्रोपस्पृ  
 श्य वाग्यतः विभज्य पावितं शेषसंजीताशेषमा  
 दृतं एकश्रोत्रमहोमेतं निःसंगः संयते द्वियः



आत्मकीऽप्राप्तरतः प्राप्तात्मवान्समदर्शनः त  
 स्मान्नियमयषड्वर्गमभ्यावेनचरेन्मुनिः विरक्तः  
 सुल्लकामे भोला ध्यात्मनिसुसंमहतज्ञाननि  
 ष्ठा विरक्तो वामभक्तो वाऽनपेक्षकः सलिः गाना  
 श्रममास्त्यत्काचरेदविधिगोचरः बुधो वालकव  
 त्कीर्तेकुशलोऽजडवच्चरेतवदेन दुन्मतवदिद्वन्द्वो  
 चर्यो नौगमश्चरैतवेदवाद्दरतौ न स्यान्नपाषण्डी न हेतु  
 कः शुष्कवादविवादेन किंचित्प्रक्षंसमाशयेत्  
 इति श्रीमभ्यागवते एकादशस्कन्धे भगवद्वा  
 क्यं उद्धृतं प्रतितथा चावहनां जन्मनामंतेना  
 नवान्मां प्रपद्यते वासुदेवः सर्वमिति समहात्मा  
 सुदुर्लभः यदा हि निन्दितार्थेषु न कर्मस्वनुषज्जते  
 सर्वसंकल्पसंन्यासी योगादस्तेष्टो त्यजेज्जिन्ता  
 मनः प्रशान्तस्य परमात्मा समाहितः शीतोष्णसुख  
 दुःखे दुःखानामनापमानयोस्तानविज्ञानवृत्तात्मा क



रस्योविजितेन्द्रियः इति श्री भगवद्गीतायो ॥ इत्या  
 दि पूर्वोक्तप्रमाणो से संन्यासियो को भी श्री राममय  
 संसार जानना चाहिये क्योंकि भगवद्वाक्य है बहुतों  
 जन्मनामांते ज्ञानवानमां प्रयद्यते वासुदेवः से र्व  
 मितिसमहात्मा सुदुर्लभः इति संक्षेपतो संन्यस्ता  
 प्रमाख्यानें सम्पूर्ण इति जानना चाहिए कि सक  
 ल वेदसास्त्रादिप्रमाणों से कल्याणसे वा इ राम सरण  
 के अन्यत्र नहि है प्रबमै अल्प बुद्धि न प्रपूर्वक सब से प्रा  
 र्थना करतूँ की आप लोग अपने कल्याण की पथान  
 कूल हजिए श्री राधो सब भी कृपा करै देखो मुझे ऐसे  
 पापि पर कृपा करते हैं तो आप सब तो पवित्र हैं एह संग्र  
 ह जो मैंने किया प्रथम मेरा अभिलाख था की संस्कृत में  
 करौं परन्तु एह सोचा की विद्वान तो स्वतः सर्वज्ञ हैं एह तो  
 अल्प बुद्धि कार्यार्थ है तेव भाषा में करना उचित जाना  
 इति श्री परब्रह्म राम जानकि के चरणोम्बुज को लक्ष्मणाचं



दन करतुहौ जेस्के कृपा कय ससेयह का र्य सम्पूर्ण  
 दुष्टातल्य आतलन क्षमाण दिकत था हनुमसी वा दिक  
 राम भक्त्ययी को प्ररु श्री स्वामी रामदास नीजगु  
 रूजिनके कृपा हम प्रेसे सठ पर प्रति सै भइ कि जर से राम  
 तत्वज्ञान प्रायास दये मम माता जी जो एस काल मे साक्षा  
 त अनुसुया है प्ररु मम पिता श्री ठाः प्रजो ध्यावक स सा  
 क्षात धर्म रूप है सर्वज्ञ परं भागवत श्री सीताराम  
 पदाम्बु जारै धैकलिक लुष विना सक श्री स्वामी रात्र्या  
 न्हराम मक्ति मेली न रहतु है प्रति सै प्रम प्रल्य बुद्धि पर कृ  
 पा की एकी मुभ को वाल्या वस्था से विद्या पढाया प्ररु जो कु  
 ह् मुभ को परितान दुष्टा उन्ही की कृ पा है प्रवसव से एहे प्राथ  
 नहि की मेरी विनती पर चित देकर प्रौ आपन दास वाल क जा  
 निकै एस्को देखे प्ररु जो सौ धै जे जहो इवह सो धै मुभ को जो अ  
 या सो सिखाइति श्री मुमुक्षु स्नेह वीर प्रसाद राम प्रताव नाराय  
 ण कृतो समस्तं सुमं मुयात श्री रामाय नमः ॥



श्रीरामचन्द्रस्य कृपा मिलारवी श्रीमम्म  
हावीर प्रसाद सिंहः ॥ निष्कंठकंचैव भवा  
विविपोतं मुमुक्षु रत्नचचकार दिव्यम् ॥

सं. १६२६ माघ शुक्ल

पौर्णमासी

॥ ❖ ❖ ❖ ॥

❖ ❖ ❖

❖ ❖ ❖